



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 195]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 12, 2019/आषाढ़ 21, 1941

No. 195]

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 12, 2019/ASHADHA 21, 1941

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 जुलाई, 2019

विषय: चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया गणराज्य से "क्लोरीनेटेड पॉलीविनाइल क्लोराइड (सीपीबीसी) रेसिन – आगे सम्मिश्रण में प्रसंस्कृत हो अथवा नहीं" के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच के प्रारंभिक जांच परिणाम।

सं. 06/03/2019-डीजीटीआर.— यथा संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटन-रोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटन-रोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए।

क. मामले की पृष्ठ भूमि

- मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड और मैसर्स केम वन केमप्लास्ट प्रा. लि. (जिन्हें यहां आगे "याचिकाकर्ता" अथवा "आवेदक" कहा गया है) ने समय-समय पर यथा संशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे बाद में अधिनियम कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथा संशोधित सीमा प्रशुल्क (पाटित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की जांच, मूल्यांकन एवं संग्रहण तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे आगे यहां नियमावली भी कहा गया है) के अनुसार चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया जनवादी गणराज्य (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित क्लोरीनेटेड पॉलीविनाइल क्लोराइड - आगे सम्मिश्रण में प्रसंस्कृत हो अथवा नहीं" (जिसे

यहां आगे संबद्ध सामान अथवा विचाराधीन उत्पाद कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी शुल्क संबंधी जांच शुरू करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे यहां आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है।

2. यतः इस तथ्य पर संतुष्ट होते हुए कि आवेदकों द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 28 मार्च, 2019 की अधिसूचना संख्या 6/3/2019-डीजीटीआर द्वारा एक सार्वजनिक अधिसूचना जारी की थी, जिसके द्वारा उपरोक्त नियमावली के नियम 5 के अनुसार पाटन-रोधी जांच शुरू की गई थी, ताकि संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटन-रोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश की जा सके, जिसे यदि लगाया जाए, तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिये पर्याप्त होगी।

ख. प्रारंभिक जांच परिणामों के लिए औचित्य

3. आवेदक घरेलू उद्योग ने आयात की मात्रा में तेजी से वृद्धि होने, आयात कीमतों में कटौती करने (उत्पादन की लागत में समानुपात कटौती किए बिना), लगातार वित्तीय घाटे होने, वाणिज्यिक उत्पादन के शुरू होने से अत्यधिक परिकलित घाटे होने, जो कि वर्ष 2018-19 की तृतीय और चतुर्थ तिमाही में और गहन हो गए हैं, को ध्यान में रखते हुए अंतरिम पाटन-रोधी शुल्क लागू करने की सिफारिशें करने का अनुरोध किया है। संबद्ध देशों से उत्पादक निर्यातिक भारत में संबद्ध वस्तुओं का और भी अधिक तंजी से पाटन करने लगे हैं।

4. प्रारंभिक जांच परिणामों के संबंध में नियम 12 में उल्लिखित प्रावधान निम्नानुसार है:-

"निर्दिष्ट प्राधिकारी जांच शुरू करने की कार्रवाई शीघ्र करेंगे और उचित मामलों में निर्यात कीमत, सामान्य मूल्य और पाटन के मार्जिन तथा विनिश्चित देशों से आयातों के संबंध में प्रारंभिक जांच परिणाम दर्ज करेंगे और साथ ही घरेलू उद्योग की क्षति के बारे में जांच परिणाम को भी दर्ज करेंगे और ऐसे परिणाम में पाटन, क्षति पर प्रारंभिक निर्धारण की पर्याप्त सूचना निहित होगी तथा जो ऐसे तथ्य और विधि के मामलों का हवाला देगी, जिसके फलस्वरूप तकर्कों को स्वीकृत अथवा खारिज किया गया है।"

5. प्राधिकारी ने अनन्तिम शुल्कों के माध्यम में तत्काल राहत प्रदान करने के लिए घरेलू उद्योग के अनुरोध और उसके द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की है। उपरोक्त प्रावधान और आवेदकों द्वारा प्रस्तुत किए गए तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों पर विचार करने के लिए इस मामले को उचित समझते हैं। प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए और प्रस्तुत किए गए समस्त आंकड़ों/दस्तावेजों/निवेदनों की व्यापक जांच की गई है, जिसके ब्यौरे नीचे दिए गए हैं।

ग. क्रिया-विधि

6. प्राधिकारी द्वारा इस जांच के संबंध में निम्नोक्त वर्णित क्रिया-विधि का अनुसरण किया गया है:

(1) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 5 के उप-नियम (5) और दिव्यपक्षीय वचनबद्धताओं के अनुसार जांच शुरू करने की कार्रवाई करने से पहले पाटन-रोधी आवेदन-पत्र प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावास को अधिसूचित किया है।

(2) प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के संबद्ध आयातों की पाटन-रोधी जांच शुरू करने के लिए भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 28 मार्च, 2018 को प्रकाशित एक अधिसूचना जारी की थी।

(3) भारत में स्थित चीन और कोरिया के दूतावासों को नियमावली के नियम 6 (2) के अनुसार जांच शुरू करने के बारे में इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे चीन जनवादी गणराज्य और कोरिया जनवादी गणराज्य से निर्यातिकों/उत्पादकों को यह परामर्श दें कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत कर दें।

(4) प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार संबद्ध सूचना मंगाने के लिए संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को पत्र भेजे थे:-

क्रमांक	उत्पादकों/निर्यातकों के नाम
1.	शानडोंग गाओक्सिन केमिकल कंपनी लिमिटेड, चीन
2.	हांगज्ञाऊ इलेक्ट्रोकेमिकल ग्रुप कंपनी लिमिटेड, चीन
3.	शानडोंग यादा न्यू मेटेरियल कंपनी लिमिटेड, चीन
4.	नोविस्टा
5.	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड, चीन
6.	सनडोव पोलीमर्स कंपनी लिमिटेड, चीन
7.	शानडोंग किसयान शेंग न्यू मेटेरियल्स टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड, चीन
8.	हनवाहा केमिकल कार्पोरेशन, कोरिया

5. उपरोक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर भेजे हैं:-

क्रमांक	उत्पादकों/निर्यातकों के नाम
1.	शानडोंग गाओक्सिन केमिकल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
2.	शानडोंग पुजी रबड एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
3.	हांगज्ञाऊ इलेक्ट्रोकेमिकल ग्रुप कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
4.	वेईफांग संडो केमिकल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
5.	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
6.	सनडोव पोलीमर्स कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
7.	शानडोंग किसयानशेंग न्यू मेटेरियल्स टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
8.	हनवाहा केमिकल कार्पोरेशन, कोरिया जनवादी गणराज्य

6. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं का पत्र भेजे थे:-

क्रमांक	आयातकों/व्यापारियों/प्रयोक्ताओं के नाम
1.	आला केमिकल्स लिमिटेड
2.	अपोलो पाईप्स लिमिटेड
3.	अजय इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन लिमिटेड
4.	अजय पोलीमर्स
5.	बोथारा एंग्रो ईक्सिमेंट प्राईवेट लिमिटेड
6.	डेसाना पोली प्लास्टिक इंडस्ट्रीज
7.	ल्यूब्रीजोल एडवांस्ड मेटेरियल्स इंडिया प्राईवेट लिमिटेड
8.	बेसिल प्रोम्प्ट विनायल प्राईवेट लिमिटेड
9.	फ्लोवेकन पोली प्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड प्लाट
10.	कनकाई पाईप्स एंड फिटिंग्स प्राईवेट लिमिटेड
11.	हिल लिमिटेड
12.	एचपी इंटरनेशनल
13.	कर्ण पोलीमर्स प्राईवेट लिमिटेड
14.	केलिवन प्लास्टिक प्राईवेट लिमिटेड
15.	किसान मोल्डिंग्स लिमिटेड
16.	कृषि पोलीमर्स प्राईवेट लिमिटेड
17.	न्योसील एडहेसिव प्राईवेट लिमिटेड
18.	पिडलाईट इंडस्ट्रीज लिमिटेड
19.	प्रेसिशन प्लास्टिक इंडस्ट्री प्राईवेट लिमिटेड
20.	परम पोलीमर्स प्राईवेट लिमिटेड
21.	प्रिंस पाईप्स एंड फिटिंग्स प्राईवेट लिमिटेड

22.	प्रिंस सीवर सिस्टम्स प्राईवेट लिमिटेड
23.	पुष्प ग्लोबल कंपनी
24.	आर. सी. प्लास्टो टेंक्स एंड पाईप्स प्राईवेट लिमिटेड
25.	रेवा पोली प्लास्ट
26.	सागर पोलीटेक्निक लिमिटेड
27.	स्पेक्ट्रा पाईप्स प्राईवेट लिमिटेड
28.	स्टार इंडस्ट्रीज
29.	स्टार पीवीसी पाईप्स एंड फिटिंग्स प्राईवेट लिमिटेड
30.	सब्रे केटल केम प्राईवेट लिमिटेड
31.	सुधाकर इरिगेशन सिस्टम्स प्राईवेट लिमिटेड
32.	सुमो पोलीप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड
33.	दि सुप्रीम इंडस्ट्रीज लिमिटेड
34.	सूर्य रोशनी लिमिटेड
35.	वेस्टस इंडस्ट्रीज लिमिटेड
36.	वाटरफ्लो पाईपिंग सिस्टम
37.	वाटर टेक (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड
38.	एब्क इंडस्ट्रीज
39.	ऐसी पोली प्लास्ट
40.	चेमियल कमर्शियल कंपनी लिमिटेड
41.	गौरीशंकर पोलीमर्स
42.	एच सेलिक्स एंड कंपनी
43.	मॉस एडिटाईब्स प्राईवेट लिमिटेड

44.	मयूर डाईस एंड केमिकल कार्पोरेशन
45.	मीट मार्किटिंग (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड
46.	नवयुग केमिकल्स प्राईवेट लिमिटेड
47.	ओशो पोलीमर्स
48.	ओवरसीज पालीमर्स प्राईवेट लिमिटेड
49.	पोलीमान इंडिया लिमिटेड
50.	प्रयाग पोलीमर्स (प्राईवेट) लिमिटेड
51.	प्रिंस मार्किटिंग
52.	साई एक्जिम
53.	सालासर इम्पेक्स प्राईवेट लिमिटेड
54.	श्रीजी इम्पेक्स
55.	सुशीला परमार इंटरनेशनल प्राईवेट लिमिटेड
56.	सिनर्जी इंडस्ट्रीज
57.	एस्ट्रेल पोलीटेक्निक लिमिटेड

(7) जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित आयातकों और प्रयोक्ताओं ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं:-

क्रमांक	आयातकों/प्रयोक्ताओं के नाम
1.	सुशीला परमार इंटरनेशनल प्राईवेट लिमिटेड
2.	एचआईएल लिमिटेड
3.	वीटस इंडस्ट्रीज लिमिटेड
4.	प्रिंस पाईप्स एंड फिटिंग्स लिमिटेड
5.	बेसिल प्रोम्पट विनाईल प्राईवेट लिमिटेड

(8). जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं:-

क्रमांक	हितबद्ध पक्षकारों के नाम
1.	एच पी इंटरनेशनल
2.	प्रेसिशन प्लास्टिक इंडस्ट्री प्राईवेट लिमिटेड
3.	मॉस एडिटिव्स प्राईवेट लिमिटेड
4.	एस्ट्राल पोलीटेक्निक लिमिटेड

(9) प्राधिकारी ने जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना निम्नलिखित एसोसिएशनों को भी भेजी थीं और उनसे अनुरोध किया था कि वे जांच शुरू करने के संबंध में अपने सभी सदस्यों को सूचित करें और साथ ही उत्तर/टिप्पणी, यदि कोई हो, प्रस्तुत करें:-

क्रमांक	एसोसिएशनों के नाम
1.	ऑल इंडिया प्लास्टिक इंडस्ट्रीज एसोसिएशन
2.	आर्गेनाईजेशन ऑफ पेपर प्रोसेशर ऑफ इंडिया (ओपीपीएल)
3.	महाराष्ट्र पीवीसी पाईप मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन
4.	ऑल इंडिया प्लास्टिक मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन
5.	आंध्र प्रदेश प्लास्टिक मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन
6.	टीएन पीवीसी मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन

(10) किसी भी एसोसिएशन ने उपरोक्त अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है। तथापि अल्काली मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन से पाटन-रोधी शुल्क लागू करने के समर्थन में एक पत्र प्राप्त हुआ है।

(11) याचिकादाताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावों की उनकी पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे याचिकादाताओं अथवा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान किए गए साक्ष्य के अगोपनीय वृत्तान्त को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए एक सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराया गया था।

(12) भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की अनुकूलतम लागत और उनको निर्मित करने और बेचने के आधार पर क्षति रहित कीमत (जिसे आगे "एनआईपी" कहा गया है) का सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएपी) और पाटन-रोधी नियमावली के अनुवंध-3 के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और आकलन किया गया है, ताकि क्षति मार्जिन का पता लगाया जा सके।

(13) वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2017 से 30 सितंबर, 2018 तक (18 महीनों) की है। तथापि, क्षति की जांच करने की अवधि में वर्ष 2014-15, 2015-16, 2016-17 और जांच अवधि को भी शामिल किया गया है। क्षति का विश्लेषण करने के लिए घरेलू उद्योग के आंकड़ों की छोटी लम्बाई को ध्यान में रखते हुए जांच की अवधि को तिमाहियों में विभाजित किया गया है।

(14) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था कि वह जांच अवधि सहित विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे प्रदान करने की व्यवस्था करें। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस और महानिदेशक प्रणाली से अधिप्राप्त आयात आंकड़ों की जांच की है और वर्तमान जांच में महानिदेशक प्रणाली के आंकड़ों पर विश्वास किया है।

(15) प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रसंग में इस चरण तक सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों और प्रदत्त सूचना के समर्थन में प्रस्तुत किए गए साक्ष्य पर जितना आवश्यक था, उतना विचार किया है। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यात्मक दस्तावेजों की प्राधिकारी आगे जांच करेंगे, जो कि अंतिम जांच परिणाम का निर्धारण करते समय निष्कर्षों का आधार बनेंगे।

(16) हितबद्ध पक्षकार द्वारा *** सूचना को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया गया है तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उस पर उसी प्रकार से विचार किया गया है।

(17) इस जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई औसत विनिमय दर, 1 अमरीकी डालर = 66.61 रुपए है।

घ. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

7. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद “क्लोरीनेटेड पॉलीविनाइल क्लोराइड (सीपीवीसी) – आगे सम्मिश्रण में प्रसंस्कृत हो अथवा नहीं” है।

8. सीपीवीसी पॉलीविनाइल क्लोराइड रेसिन के क्लोरीनेसिन से उत्पादित थर्मोप्लास्टिक है। यह काफी अधिक लचीला होता है और मानक पीवीसी की अपेक्षा अधिक तापमान को सहन कर सकता है। जब सीपीवीसी रेसिन सीपीवीसी सम्मिश्रण बनाने के लिए स्टेबलाइजर, लुब्रिकेंट, इम्पैक्ट बॉडीफार्यर्स, प्रोसेसिंग एड्स, पिगमेंट्स (उचित रंग देने के लिए) जैसे घटकों के साथ प्रसंस्कृत किया जाता है, तब यह एक सम्मिश्रण के रूप में निखरता है और उसे सीपीवीसी सम्मिश्रण कहा जाता है।

9. याचिकादाताओं ने बताया है कि सीपीवीसी आदर्श रूप से स्व-समर्थक निर्माणों के लिए उपयुक्त होता है जहां तापमान 200 डिग्री फारेनहाइट (90 डिग्री सेल्सियस) तक विद्यमान होता है। इसे ज्वलित करना बहुत कठिन होता है और जब यह ज्वाला के सीधे संपर्क में नहीं होता है, तो यह स्वतः बुझ जाता है। इसे आवासीय के साथ-साथ वाणिज्यिक निर्माण कार्यों में जल की पाईपिंग प्रणालियों में सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता है क्योंकि यह 40 °सी से 50 °सी (104 °एफ से 122 °एफ) तक अथवा उससे अधिक के तापमान में जल अपघर्षण प्रतिरोधन कर सकता है। इसे आवासीय के साथ-साथ वाणिज्यिक दोनों क्षेत्रों में गर्म और ठंडे जल प्लंबिंग संवितरण, अग्नि संरक्षण, रिक्लेम्ड वाटर पंपिंग (पीले पाईप), चिल्ड वाटर पाईपिंग, हाईड्रोनिक पाईपिंग और संवितरण (रेडिएटर्स, फैन क्वार्लस आदि) के लिए प्रयुक्त किया जाता है और साथ ही इसका प्रयोग अधिकतर औद्योगिकीय और प्रसंस्करण पाईपिंग अनुप्रयोग के लिए भी किया जाता है।

10. सीपीवीसी काफी डक्टाइल होता है जो अधिक लचीलापन और अपघर्षण प्रतिरोधकता होने देता है। अतिरिक्त रूप से, सीपीवीसी की यांत्रिक शक्ति उसे उन स्थितियों में धात्विक पाईप की कई किस्मों को बदलने के लिए अर्थक्षम घटक बना देता है जहां धातु की क्षरण के लिए संवेदनशीलता उसके प्रयोग को सीमित करती है। सीपीवीसी को अंत प्रयोक्ता अनुप्रयोगों के आधार पर मुख्यतया दो ग्रेडों में वर्गीकृत किया जाता है, नामतः (क) पाईप ग्रेड और (ख) फिटिंग ग्रेड। इसके अतिरिक्त याचिकादाता ने दावा किया है कि विचाराधीन उत्पाद को दो प्रसंस्करणों नामतः ड्राई प्रोसेस और वेट प्रोसेस के माध्यम से निर्मित किया जा सकता है। तथापि, याचिकादाता ने यह भी दावा किया है कि उत्पादों के इन रूपों में विभिन्न प्रक्रियाओं अथवा विभिन्न ग्रेडों के कारण कोई अंतर नहीं होता है।

11. विचाराधीन उत्पाद सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 39 और उप शीर्ष 39049000 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, इस उत्पाद को इन उप-शीर्षों 39042110, 39042190, 39042210, 39042290 और 39049000 के तहत भी आयातित किया गया है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
12. याचिकादाताओं ने यह तर्क दिया है कि सीपीवीसी के सभी रूप मुख्यतया समान प्रोटोगिकी प्रयुक्त करते हैं और मुख्यतया समान उत्पादन प्रक्रिया अपनाते हैं और इनका उत्पादन समान मूल कच्ची सामग्री से किया जाता है और समान कीमत निर्धारण करते हैं। यह बताया गया है कि सीपीवीसी रेसिन और सम्मिश्रण के बीच अंतर केवल इस तथ्य के आधार पर होता है कि सम्मिश्रण का रूप देने के लिए सीपीवीसी रेसिन में अतिरिक्त संघटकों को जोड़ा जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी निवेदन किया है कि सीपीवीसी रेसिन और सम्मिश्रण के बीच लागत में अंतर, मुख्यतया सम्मिश्रण निर्मित करने के लिए प्रयुक्त अतिरिक्त कच्ची सामग्री के कारण होता है और न कि किसी गंभीर विनिर्माण करने से। याचिकादाताओं ने आग्रह किया है कि सीपीवीसी रेसिन और सम्मिश्रण एक वस्तु हैं।
13. चीन और कोरिया से प्रतिवादी विदेशी उत्पादकों/निर्यातकों ने विचाराधीन उत्पाद के कार्य-क्षेत्र का खंडन किया है, लेकिन एक आयातक और प्रयोक्ता ने यह तर्क दिया है कि सीपीवीसी रेसिन और सम्मिश्रण को एक जी जांच के कार्य-क्षेत्र के भीतर इस आधार पर समान वस्तु नहीं माना जाना चाहिए कि सीपीवीसी रेसिन के उत्पादन के बाद सीपीवीसी सम्मिश्रण दूसरा कदम है और सम्मिश्रण के लिए उत्पादन प्रक्रिया अत्यधिक तकनीकी है। यही कारण है कि सीपीवीसी रेसिन के अधिकतर निर्यातक/उत्पादक बाह्य स्रोत से सम्मिश्रण क्रियाकलाप करवा रहे हैं। सीपीवीसी सम्मिश्रण की उत्पादन प्रक्रिया, सीपीवीसी रेसिन से भिन्न है और दोनों के बीच लागत और कीमत में अंतर 30-100% तक की सीमा के भीतर होता है। उन्होंने पीवीसी ससर्पेंशन और पीवीसी पेस्ट, पेसिलीन-जी और 6-एपीए के संबंध में की गई विगत जांचों का हवाला दिया है, जिनमें इन उत्पादों को विभिन्न वस्तुएं माना गया था, हालांकि वे विनिर्माण की एक श्रृंखला का ही भाग हैं। उन्होंने यह तर्क दिया है कि रेसिन और सम्मिश्रण को एक वस्तु नहीं माना जा सकता है।
14. नियम 2 (घ) में उल्लिखित प्रावधान यह है कि -

“समान वस्तु” से ऐसी वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाठने के कारण जांच के अंतर्गत वस्तु के सभी प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर अन्य वस्तु जोकि यद्यपि सभी प्रकार से समतुरूप नहीं हैं परंतु जांचाधीन वस्तुओं के अत्यधिक सदृश विशेषताएं रखती हैं;
15. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि सीपीवीसी के विभिन्न रूपों का उत्पादन समान मूल कच्ची सामग्री का प्रयोग करके किया जाता है। साथ ही यह भी नोट किया जाता है कि विभिन्न रूपों की मुख्यतया समान विनिर्माण प्रक्रिया और प्रोटोगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पादन विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, संवितरण और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण होता है। जबकि यह सही है कि सीपीवीसी सम्मिश्रण के लिए अतिरिक्त संघटकों को रेसिन के साथ जोड़ने की आवश्यकता होती है, ताकि उसे सीपीवीसी सम्मिश्रण बनाया जा सके, लेकिन वे केवल संवर्धक होते हैं और वे उत्पाद के मूल लक्षण में कोई परिवर्तन नहीं करते हैं। यह भी नोट किया जाता है कि सीपीवीसी रेसिन सम्मिश्रण बनाने का प्रमुख उद्देश्य अंतर: पाईपों और फिटिंग्स बनाने से पूर्व सीपीवीसी सम्मिश्रण बनाना होता है। विगत मामलों का हवाला देने के संबंध में प्राधिकारी ने निर्णय दिया है कि पटसन उत्पादों और ग्लास फाईबर और उसकी वस्तुओं से संबंधित पूर्व जांचों में एक विचाराधीन उत्पाद के रूप में विभिन्न रूप हैं, इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्येक मामले के तथ्य को उक्त मामले के परिप्रेक्ष्य में विचार करने की आवश्यकता है। प्राधिकारी का मानना है कि वास्तविक गुणक्षमताओं अथवा विभिन्न रूपों की कीमतों में अंतर, इन रूपों को पूर्णतया विभिन्न उत्पाद नहीं बना सकते हैं और कम से कम वे उचित तुलना सुनिश्चित करने के प्रयोजन से उत्तम प्रासंगिक हो सकते हैं। प्राधिकारी का यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं, पाठन-रोधी नियमावली के अनुसार वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों से आयातित उत्पाद के समान वस्तुएं हैं।

16. इसके अतिरिक्त विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न रूपों की उचित तुलना करने के लिए प्राधिकारी ने सीपीवीसी रेसिन और सम्मिश्रण के लिए पृथक रूप से क्षति मार्जिन, पाटन मार्जिन और क्षति विश्लेषण किया है और उसके बाद दो उत्पाद रूपों की भारित औसत कीमत का निर्धारण किया है।

इ. घरेलू उद्योग का कार्य-क्षेत्र और आधार

17. पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

“(ख) “घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में लगे हुए हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से हैं जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाइट वस्तु के नियतिकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में “घरेलू उद्योग” यद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।”

18. यह याचिका मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड द्वारा दायर की गई थी। बाद में मैसर्स केम वन केमप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड और मैसर्स मेघमाणी फाईनकेम लिमिटेड ने याचिका का समर्थन किया था। इन तीन प्रयोज्यताओं में से एक मात्र मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड ही सीपीवीसी रेसिन और सम्मिश्रण का विद्यमान उत्पादक है, जबकि दो उत्पादकों नामतः मैसर्स केम वन केमप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड और मैसर्स मेघमाणी फाईनकेम लिमिटेड ने अभी वाणिज्यिक उत्पादन शुरू नहीं किया है। केवल मैसर्स मेघमाणी फाईनकेम लिमिटेड अभी संकल्पना चरण में है और यह संकल्पना चरण में परियोजना स्थापित कर रहा है, जो कि बाजार की परिस्थितियों पर निर्भर करता है, हालांकि उन्होंने याचिका का भाग होने की इच्छा व्यक्त की है। मैसर्स केम वन केमप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड के संबंध में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने परियोजना को अंतिम रूप दे दिया है और उन्होंने प्रोटोग्राफी के अंतरण सहित संयंत्र स्थापित करने का मूल कार्य कर लिया है। उन्होंने उत्पादन की लागत आदि को दर्शाने वाली परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है। इसलिए प्राधिकारी वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड और मैसर्स केम वन केमप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड को घरेलू उद्योग के रूप में मानते हैं।

19. सीपीवीसी रेसिन के कुछ अन्य उत्पादक हैं, जो सीपीवीसी रेसिन की खरीददारी मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड से करते हैं अथवा रेसिन का आयात करते हैं और पाईप बनाने के लिए मुख्यतया केप्टिव खपत के लिए उसे सीपीवीसी सम्मिश्रण का विनिर्माण करने के लिए प्रसंस्कृत करते हैं। ऐसी कंपनियां को जिनके पास सीपीवीसी रेसिन का विनिर्माण करने की सुविधाएं नहीं हैं, लेकिन खरीदे गए सीपीवीसी रेसिन (देशीय और/अथवा आयातित) से सम्मिश्रण बनाने के लिए केवल सम्मिश्रक हैं, नियम 2 (ख) में उल्लिखित परिभाषा के भीतर “घरेलू उद्योग” के रूप में नहीं माना गया है।

20. याचिकादाता मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड और मैसर्स केम वन केमप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड नियमावली के नियम 2 (ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के पात्रता मानदंड को पूरा करने के साथ-साथ नियमावली के नियम 5 (3) के अंतर्गत आधार के मानदंड को भी पूरा करती हैं।

च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

सामान्य मूल्य

21. धारा 9 (1) (ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है:

(i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप-नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित नियर्तिक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा

(ii) जब नियर्तिक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की बिक्री न हुई हो अथवा जब नियर्तिक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो, अथवा

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिधारित प्रशासनिक, विक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उदगम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागतः

परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल स्थानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

22. जांच शुरू करने के बाद प्राधिकारी ने चीन में उत्पादकों/निर्यातकों को परामर्श दिया था कि वे जांच शुरू करने की सूचना का उत्तर दें और अपनी बाजार की अर्थव्यवस्था का निर्धारण करने के लिए संबद्ध सूचना प्रदान करें। प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (3) में निर्धारित मानदंड के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की अवधारणा का खंडन करने के लिए सभी ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को अनुपूरक प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं। प्राधिकारी ने चीन सरकार से भी अनुरोध किया था कि वह चीन में उत्पादकों/निर्यातकों को परामर्श दे कि वे संबद्ध सूचना प्रस्तुत करें।

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और चीन सरकार को सूचना को निर्धारित प्रारूप और तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता के बारे में पर्याप्त रूप से सूचित किया गया है और उन्हें इस संबंध में अपने निवेदन करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। अनेक उत्पादकों/निर्यातकों ने वर्तमान जांच का उत्तर दिया है। तथापि, किसी ने भी अनुपूरक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे कि प्राधिकारी चीन में प्रचलित वर्तमान बाजार दशाओं की जांच करने में समर्थ हो सकें। इसके अतिरिक्त जैसा कि नियमावली में वर्णित है, किसी भी हितवद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग के दावे को छोड़ कर, ऐसा कोई अन्य वैकल्पिक आधार प्रदान नहीं किया है, जिसके आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारित किया जा सकता हो।

24. चीन से निम्नलिखित उत्पादक निर्यातकों ने निर्यात प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं:-

(क)	शानडोंग गाओक्सिन केमिकल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
(ख)	शानडोंग पुजी रबड एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
(ग)	हांगज्ञाऊ इलेक्ट्रोकेमिकल ग्रुप कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
(घ)	वैईफांग संडो केमिकल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
(ङ)	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
(च)	शानडोंग किस्यानशेंग न्यू मेटेरियल्स टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य

25. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए और चीन की किसी भी कंपनी द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के दावे का खंडन नहीं किए जाने की स्थिति में प्राधिकारी उपयुक्त समझते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 में उल्लिखित प्रावधान के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाए। पैरा-7 में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए पदनुक्रमण निर्धारित है और यह प्रावधान भी निहित है कि "गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिनमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी"। इस प्रकार प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण, अनुबंध-7 के अंतर्गत दिए गए विभिन्न क्रमागत विकल्पों के संबंध में किए जाने की आवश्यकता है। घरेलू उद्योग ने भी यह तर्क दिया है कि किसी भी ऐसे अन्य देश से जिसके

आयातों का हिस्सा आरोपित पाटन की जांच का मामला नहीं है, भारत में आयात कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार किया जाना चाहिए।

26. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से भिन्न देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात की मात्रा और कीमतों की सूचना, महानिदेशक प्रणाली से प्राप्त की गई है। यह नोट किया जाता है कि जबकि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के कुल आयातों में से 26% आयात अर्थात् 60,918 मी.टन आयात चीन से किए गए हैं, फिर भी 62,282 मी.टन की सर्वाधिक मात्रा थाईलैंड से आयात की गई है, जो कि 26.16% भाग बनती है। इस पाटन-रोधी जांच अथवा लागू लागू पाटन-रोधी उपाय की जांच में थाईलैंड एक संबद्ध देश नहीं है, लेकिन वहां से अत्यधिक मात्रा में आयात होने की स्थिति में सीआईएफ कीमत, भारत में देय कीमत की परिचायक है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के सामान्य मूल्य की संरचना करने के लिए पैरा 7 में उल्लिखित यह विकल्प उचित है और संबद्ध वस्तुओं के सामान्य मूल्य का परिचायक है। जैसा कि कारखाना-गत कीमत प्राप्त करने के लिए सदृश/समान स्थितियों में सुसंगत रूप से किया जाता है, प्राधिकारी को सामान्य मूल्य का मूल्यांकन करने के लिए अपनी सुसंगत पद्धति को अपना कर समुद्री भाड़े, पत्तन व्यय, अंतरदेशीय भाड़े, क्रेडिट लागत और समुद्री बीमा और बैंक प्रभारों जैसे विभिन्न संघटकों पर उपयुक्त समायोजन करना होगा। इस प्रकार से संरचित किया गया सामान्य मूल्य, नीचे पाटन तालिका में दर्शाया गया है।

कोरिया जनवादी गणराज्य

27. कोरिया से मेसर्ज हनवा केमिकल कार्पोरेशन नामक केवल एक उत्पादक ने मेसर्ज हनवा कार्पोरेशन नामक अपने संबंधित प्रयोज्यता के साथ निर्यातिक की प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है। उत्पादक और निर्यातिक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर की जांच की गई है। यह पाया गया है कि प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित प्रारूप और तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है और उत्तर में विकट कमी है। उदाहरण के लिए परिशिष्ट -7 निर्धारित प्रारूप के समनुरूप नहीं है और केप्टिवली उत्पादित कच्चे माल की उत्पादन की लागत आदि प्रस्तुत नहीं की गई है। उत्पादक निर्यातिक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना अपूर्ण है और पर्याप्त नहीं है, जिससे कि प्राधिकारी उत्पादन की लागत का परिकलन और उसके बाद सामान्य मूल्य संरचित कर सकें। इसलिए इस चरण में प्राधिकारी ने उत्पादक की दावा की गई विक्री कीमत पर विचार नहीं करने का निर्णय लिया है।

28. घरेलू उद्योग ने कोरिया में सामान्य मूल्य का दावा किया है कि कोरिया में विषय वस्तुओं के आयात की कीमतों के आधार पर विचार किया जाए क्योंकि कोरिया में क्षमताएँ हाल ही में हैं और विषय वस्तुओं के लिए कोरिया में मांग का बड़ा हिस्सा अभी भी मिलता है आयात करता है। उनके दावे के समर्थन में, याचिकाकर्ताओं ने जापान से कोरिया में विषय वस्तुओं के निर्यात का सबूत देते हुए मैसर्ज कनके कॉर्पोरेशन, जापान के विक्री चालान प्रस्तुत किए हैं।

29. प्राधिकरण नोट करता है कि कोरिया में अनुमानित मांग सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध जानकारी के अनुसार 9000 मीट्रिक टन / वर्ष है। इसलिए, कोरिया अपनी घरेलू मांग को पूरा करने के लिए बड़ी मात्रा में विषय वस्तुओं का आयात करता है, क्योंकि उत्तर देने वाला उत्पादक / निर्यातिक घरेलू मांग के मुकाबले सीमित मात्रा में ही विक्री करता है। कोरिया में विषय वस्तुओं के घरेलू विक्रय मूल्यों की कीमतों के प्रमाण के रूप में कई चालान प्रस्तुत किए गए हैं। प्राधिकरण ने इस स्तर पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उक्त चालानों पर भरोसा करने का निर्णय लिया है। अनंतिम सामान्य मूल्य की गणना डंपिंग मार्जिन तालिका में नीचे दी गई है।

निर्यात कीमत

चीन जनवादी गणराज्य

(1) शानडोंग गाओमिसन केमिकल कंपनी लिमिटेड, (2) शानडोंग पुज्जे रबड एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड, (3) वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड, (4) शानडोंग कस्टर्ड न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड और (5) शानडोंग कस्टर्ड न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड के लिए निर्यात कीमत

30. उत्तरों की जांच करने से पता चला है कि इन उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना मुख्यतया भारत में उनकी नियर्ति कीमत के अनुसार पूर्ण है। इसलिए प्राधिकारी ने परिशिष्ट-3 में दिए गए नियर्तियों के विवरणों पर विश्वास किया है। प्राधिकारी द्वारा वर्तमान प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ उत्पादक नियर्तियों द्वारा किए गए अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, हैंडलिंग और सीमा-शुल्क प्रभारों, बीमा, क्रेडिट लागत, बैंक प्रभारों और पैकिंग लागत के समायोजन के दावों को स्वीकार किया गया है। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद के लिए अनंतिम नियर्ति लागत (रेसिन और सम्मिश्रण) का निर्धारण कारखाना-गत स्तर पर किया गया है, जिसे नीचे पाटन तालिका में दर्शाया गया है।

हांगज्ञाऊ इलेक्ट्रोकेमिकल न्यू मेटेरियल कंपनी लिमिटेड के लिए नियर्ति कीमत

31. हांगज्ञाऊ इलेक्ट्रोकेमिकल न्यू मेटेरियल कंपनी लिमिटेड के उत्तर की जांच करने से पता चला है कि उत्पादक ने भारत को सीधा नियर्ति किया है और साथ ही ऐसे गैर-संबंधित नियर्तिक के माध्यम से भी नियर्ति किया है, जिसने उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। चूंकि भारत को किए गए नियर्तियों का प्रमुख भाग, गैर-प्रितवादी नियर्तिक के माध्यम से किया गया है, प्राधिकारी ने निर्णय लिया है कि भारत को नियर्ति से संबंधित अपूर्ण सूचना को ध्यान में रखते हुए उत्तर को खारिज कर दिया जाए।

कोरिया जनवादी गणराज्य

हनवा केमिकल कार्पोरेशन एंड हनवा कार्पोरेशन, कोरिया जनवादी गणराज्य के लिए नियर्ति कीमत

32. उत्तर की जांच करने से पता चला है कि मेसर्ज हनवा केमिकल कार्पोरेशन ने मुख्यतया सीधे भारत को नियर्ति किए हैं और मामूली मात्रा में नियर्ति, अपने संबंधित प्रयोज्यता मेसर्ज हनवा कार्पोरेशन के माध्यम से किए हैं। घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि कोरिया से उत्पादक नियर्तिक के उत्तर को खारिज कर दिया जाए क्योंकि उन्होंने भारत में अपना प्रचालनों के संबंध में पूरी सूचना प्रस्तुत नहीं की है, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध सूचना से पता चलता है कि मेसर्ज हनवा केमिकल इंडिया प्राईवेट लिमिटेड भारत में विद्यमान है, लेकिन इस सूचना का प्रकटन उत्तर में नहीं किया गया है।

33. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और नियर्तिक द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की है तथा नोट किया है कि नियर्तिक ने भारत में अपने प्रचालनों का प्रकटन नहीं किया है तथा इन प्रचालनों के लिए किसी भी प्रकार के समायोजनों (व्यय) का दावा नहीं किया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कारोबार में समायोजनों में व्यापक अंतर है, जिनके लिए कोई उचित स्पष्टीकरण दिए विना कारखाना-गत नियर्ति कीमत के परिकलन की मांग की गई है। प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद नियर्तिक से और अधिक सूचना मंगाने पर विचार कर सकते हैं, जिस पर अंतिम जांच परिणाम जारी करने से पूर्व उचित सत्यापन करने पर विचार किया जाएगा। इसलिए इस चरण में प्राधिकारी ने निर्णय लिया है कि कोरिया से उत्पादक नियर्तिक द्वारा किए गए कारखाना-गत नियर्ति कीमत पर विचार नहीं किया जाए।

34. कोरिया जनवादी गणराज्य से संभी संबद्ध नियर्तियों के लिए एनईपी का परिकलन, महानिदेशक, प्रणाली से प्राप्त किए गए कारोबार-वार आयात आंकड़ों से सीआईएफ कीमत का आवश्यक समायोजन करने के बाद किया गया है।

पाटन मार्जिन तालिका

क्रमांक	उत्पादक/नियर्तिक	एनईपी	सीएनबी	डीएम	डीएम	डीएम
		अमरीकी डालर/मी.टन	अमरीकी डालर/मी.टन	अमरीकी डालर/मी.टन	%	%
चीन जनवादी गणराज्य						
				रेसिन		
1	शानडोंग गाओकिसन केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	1,908	***	***	50- 60

2	शानडोंग पुज्जे रबड एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड	***	1,908	***	***	60-70
3	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	1,908	***	***	55-65
4	वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	1,908	***	***	50-60
5	शानडोंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	1,908	***	***	60-70
सम्प्राप्ति						
1	शानडोंग गाओकिसन केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	2,365	***	***	0-10
2	शानडोंग गाओकिसन केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	-	***	***	-
3	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	-	***	***	-
4	वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	-	***	***	
5	शानडोंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	2,365	***	***	20-30
कोरिया जनवादी गणराज्य						
रेसिन						
उत्पादक/निर्यातक		एनईपी	सीएनवी	डीएम	डीएम	डीएम
		अमरीकी डालर/मी.टन	अमरीकी डालर/मी.टन	अमरीकी डालर/मी.टन	%	%
1	सभी अन्य उत्पादक निर्यातक	1,201	1,823	622	52%	45-55
सम्प्राप्ति						
2	सभी उत्पादक निर्यातक	1,908	2,663	755	40%	35-45

35. यह देखा गया है कि चीन से सभी उत्पादकों-निर्यातकों के लिए और कोरिया से निर्यात के लिए डंपिंग मार्जिन डी मिनिसिस से ऊपर है और काफी सकारात्मक है।

ज. क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच

36. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति पर घरेलू उद्योग और नियातिकों/ आयातकों/ व्यापारियों/प्रयोक्ताओं के विभिन्न निवेदनों को नोट किया है और उनका विश्लेषण रिकार्ड पर उपलब्ध तथ्यों और लागू विधि को ध्यान में रख कर किया है। प्राधिकारी द्वारा नीचे किया गया क्षति विश्लेषण स्वतः हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न निवेदनों का निदान करता है।

संचयी मूल्यांकन

37. विश्व व्यापार संगठन के अनुच्छेद 3.3 और पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 के पैरा (3) में यह प्रावधान है कि ऐसे मामले में जिसमें एक से अधिक देशों से उत्पाद के आयातों की एक साथ पाटन-रोधी जांच की जाती है, वहां प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन करेंगे, यदि निम्नोक्त का निर्धारण किया जाना है -

(क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन का मार्जिन, निर्यात कीमत की प्रतिशत के रूप में दो प्रतिशत अधिक होता है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा, समान वस्तु के आयात के तीन प्रतिशत (अथवा अधिक) होती है अथवा जहां विशिष्ट पृथक देश का निर्यात तीन प्रतिशत से कम होता है, तो वहां समग्र रूप से संचयी आयात, समान वस्तु के आयात के सात प्रतिशत से भी अधिक बनते हैं और

(ख) आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की दशाओं के आलोक आयातों का संचयी मूल्यांकन में उपयुक्त है।

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि

(क) संबद्ध देशों से भारत में संबद्ध वस्तुओं का पाटन किया जा रहा है। ऐसे प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन, नियमावली में निर्धारित न्यूनतम सीमाओं से अधिक है।

(ख) प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा, विशिष्ट रूप से प्रत्येक देश की मात्रा, आयातों की मूल मात्रा के 3% से अधिक है।

(ग) आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन उपयुक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से आयात न केवल प्रत्येक संबद्ध देश द्वारा पेश की जा रही समान वस्तुओं से बल्कि भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा पेश की जा रही समान वस्तुओं से भी सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं।

39. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह समझते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों से संचयी रूप से घरेलू उद्योग की क्षति का मूल्यांकन करना उचित है।

40. अनुबंध-2 के साथ पठित पाटन-रोधी नियमावली के नियम-11 में किसी क्षति के निर्धारण में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में ".....पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए.. "... ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी, जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से की कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में लकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती। भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले उत्पादन, क्षमता उपयोग, विक्रियों की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल विक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे सूचकों पर पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 के अनुसार विचार किया गया है।

ज्ञ. पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

(1) मांग का मूल्यांकन

41. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ आवेदक की घरेलू विक्रियों और सभी स्रोतों से आयातों की सारांश के रूप में भारत में उत्पाद की मांग अथवा प्रत्यक्ष खपत को परिभाषित किया है। इस प्रकार से मूल्यांकित मांग को नीचे

तालिका में दर्शाया गया है।

क्रमांक	मांग	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि-वार्षिकीकृत
1	घरेलू उद्योग की विक्रियां	मी.टन	-	-	-	3,898
2	संबद्ध देशों से आयात	मी.टन	10,656	21,866	47,702	48,907
3	अन्य देशों से आयात	मी.टन	99,486	1,06,292	1,00,030	1,09,643
4	कुल मांग	मी.टन	1,10,142	1,28,158	1,47,731	1,62,448
	मांग में बाजार का हिस्सा					
5	घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	0.0	0.0	0.0	2.40
6	संबद्ध देशों का हिस्सा	%	9.67	17.06	32.29	30.11
7	अन्य देशों का हिस्सा	%	90.33	82.94	67.71	67.49
8	कुल	%	100	100	100	100

42. यह नोट किया जाता है कि समग्र क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में स्थिर गति से वृद्धि हुई है। मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि में यह वृद्धि 47% है। कुल मांग में घरेलू उद्योग के बाजार का हिस्सा मात्र 2.4% है, जबकि संबद्ध देशों के बाजार का हिस्सा 30% और अन्य देशों का हिस्सा 67.5% है।

43. प्रतिवादी पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग का उत्पादन और विक्री बहुत कम है और उत्पाद की मांग-पूर्ति के बीच अत्यधिक अंतर व्याप्त है।

44. याचिकादाता ने बताया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की कुल मांग में बड़ा भाग संबद्ध देशों से भिन्न देशों का है। मेसर्ज डीसीडब्ल्यू लिमिटेड ने 12,000 मी.टन की स्थापित क्षमता के साथ जांच अवधि के दौरान वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया है, जबकि मेसर्ज केम वन केमप्लास्ट की परियोजना विचाराधीन उत्पाद का 27,000 मी.टन उत्पादन करने की है। इसके अतिरिक्त मेसर्ज डीसीडब्ल्यू लिमिटेड की अपनी क्षमता को 6,000 मी.टन और बढ़ाने की योजनाएँ हैं। उन्होंने बताया है कि भारत सीवीपीसी के लिए विश्व में सबसे बड़ा बाजार है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी दावा किया है कि अन्य देश पाटन में लिप्त नहीं हैं और इसलिए 67.5% आयात उचित कीमत पर होते हैं और ये आयात पाटन-रोधी-शुल्क लागू करने का संबद्ध मामला नहीं है। घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि यदि कोई पाटन नहीं हो और बाजार उचित दशाओं में प्रचालन करे तब घरेलू उद्योग मांग के बहुत बड़े हिस्से को पूरा करने में सक्षम होगा।

45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि में 1,62,448 मी.टन (वार्षिकीकृत आधार पर) की कुल मांग की तुलना में 1,09,643 मी.टन के आयात, संबद्ध देशों से भिन्न देशों से हैं। जांच अवधि में इन आयातों को शामिल नहीं किए जाने पर मांग मात्र 52,806 मी.टन की है। इस समय भारत में स्थापित क्षमता 12,000 मी.टन है और अन्य 27,000

मी.टन की क्षमता बढ़ाना विचाराधीन है। जांच अवधि के दौरान अत्यधिक मांग है जो कि स्थिर गति से बढ़ रही है और बाजार की दशाओं में सुधार, क्षमताओं को बढ़ाने के प्रति भारतीय उत्पादकों को निश्चित रूप से प्रेरित करेंगे।

(2) आयातों की मात्रा और आयातों में बाजार का हिस्सा

46. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को इस पर विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत में अत्यधिक वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने महानिदेशक, प्रणाली के कारोबार-वार आयात आंकड़ों पर विश्वास किया है।

क्रमांक	मांग	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि-वार्षिकीकृत
(क)	आयात की मात्रा					
1	संबद्ध देश	मी.टन	10,656	21,866	47,702	48,907
2	अन्य देश	मी.टन	99,486	1,06,292	1,00,030	1,09,643
3	कुल आयातों की मात्रा	मी.टन	1,10,142	1,28,158	1,47,731	1,58,550
(ख)	सीआईएफ आयात मूल्य					
1	चीन जनवादी गणराज्य	रुपये प्रति किलोग्राम	128.20	118.11	67.24	87.25
2	कोरिया जनवादी गणराज्य	रुपये प्रति किलोग्राम	-	-	68.98	88.99
3	अन्य देशों	रुपये प्रति किलोग्राम	166.53	179.76	122.74	136.26
(ग)	आयातों में बाजार का हिस्सा					
1	संबद्ध देश	%	10%	17%	32%	31%
2	अन्य देश	%	90%	83%	68%	69%
3	कुल हिस्सा	%	100%	100%	100%	100%
(घ)	निम्नोक्त के संबंध में संबद्ध देशों के आयात					
1	याचिकादाता का उत्पादन	%	-	-	-	1294%
2	मांग/खपत	%	10%	17%	32%	30%

47. यह देखा गया है कि -

- (क) समग्र क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है।
- (ख) कुल आयातों और भारत में मांग/खपत के प्रसंग में संबद्ध देशों से आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- (ग) अन्य देशों से आयातों में भी समग्र रूप से वृद्धि हुई है, लेकिन जब उनकी तुलना समग्र क्षति अवधि के दौरान हुए आयातों से करें, तो वृद्धि की दर अत्यधिक नहीं है।
- (घ) भारत में कुल आयातों में हिस्से के रूप में अन्य देशों से आयातों में समग्र अवधि में गिरावट आई है।

(ङ) याचिकादाता द्वारा यह बताया गया है कि अन्य देशों से आयात, संबद्ध देशों से आयात कीमतों से काफी अधिक कीमतों पर हुए हैं। प्राधिकारी ने इस तथ्य की जांच, मुख्य स्रोत से उपलब्ध कारोबार-वार आयात आंकड़ों से की है।

II. घरेलू उद्योग पर पाइट आयातों के कीमत प्रभाव

48. कीमतों पर पाइट आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को इस पर विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या भारत में समान उत्पादकों की कीमत के साथ तुलना करने पर पाइट आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती की जा रही है अथवा ऐसे आयातों के प्रभाव अन्यथा कीमतों को अत्यधिक स्तर पर मंद करते अथवा कीमत में वृद्धि को रोकते, जो कि अन्यथा बहुत अधिक हो जाती। पाइट आयातों के कारण घरेलू उद्योग पर कीमतों के प्रभाव की जांच, कीमत में कटौती होने, कम कीमत पर बिक्री होने, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई है, को ध्यान में रख कर किए जाने की आवश्यकता है। प्राधिकारी इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत, निवल बिक्री वसूली (एनएसआर), क्षति रहित कीमत (एनआईपी) तथा संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच लागत पर विचार करते हैं। तथापि, वर्तमान मामले में जहां एक नए उत्पादक ने उत्पाद के लिए हाल ही में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया है और जहां प्राधिकारी इसकी जांच कर रहे हैं कि क्या पाइट आयात बाजार में घरेलू उद्योग की अवस्थापना को वास्तविक रूप से मंदा कर रहे हैं, प्राधिकारी इस पर विचार करते हैं कि घरेलू उद्योग पर पाइट आयातों के प्रभाव को इस दृष्टि देखे जाने की आवश्यकता है कि घरेलू उद्योग द्वारा किस कीमत पर उत्पाद को बेचा गया है अथवा बिक्री के लिए पेश किया गया है, उत्पादन की घरेलू उद्योग की अनुकूलतम लागत और एनआईपी क्या है और उसकी तुलना आयातों की पहुंच कीमतों के साथ करते की आवश्यकता है।

(1) कीमत कटौती

49. याचिकादाताओं ने घरेलू बिक्री कीमत के साथ आयात कीमत की तुलना करके कीमत कटौती का परिकलन करने के लिए वार्षिक के साथ-साथ तिमाही आधार पर आंकड़े प्रदान किए हैं।

क्रमांक	अवधि	आयात की मात्रा	बिक्री कीमत	पहुंच कीमत	कीमत कटौती	सीमा
		मी.टन	रुपए /कि.ग्रा.	रुपए /कि.ग्रा.	रुपए /कि.ग्रा.	%
1	जांच अवधि (18 महीने)	73,361	***	95.25	***	(0-10)
2	2017-18 तिमाही 1	8,620	***	100.41	***	0-10
3	2017-18 तिमाही 2	10,760	***	94.46	***	(0-10)
4	2017-18 तिमाही 3	12,982	***	93.95	***	(0-10)
5	2017-18 तिमाही 4	13,830	***	92.37	***	(0-10)
6	2018-19 तिमाही 1	14,968	***	94.47	***	(0-10)
7	2018-19 तिमाही 2	12,199	***	97.89	***	(5-15)

50. यह नोट किया जाता है कि जबकि प्रारंभ में जब घरेलू उद्योग ने बाजार में उत्पाद की बिक्री करनी शुरू की थी, कीमत में कटौती सकारात्मक है, लेकिन अब यह नकारात्मक हो गई है। घरेलू उद्योग द्वारा यह बताया गया है कि नकारात्मक कीमत में कटौती इस तथ्य के कारण है कि उन्हें गृह बाजार को हथियाने के लिए आयात कीमतों से कम कीमत पर उत्पाद को बेचने के लिए विवश होना पड़ा है।

51. याचिकादाताओं ने दावा किया है कि अन्य देशों से कीमतों में गिरावट, उस तरह की गिरावट नहीं है, जैसे कि संबद्ध देशों से आयात की कीमतें हैं। संबद्ध देश की आयात कीमतें, अन्य देशों की आयात कीमतों से कम हैं, जिससे भारतीय बाजार को हथियाने के लिए संबद्ध देशों के उत्पादकों की उग्रता का पता चलता है।

(2) कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

52. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयात, घरेलू उद्योग की कीमतों का न्यूनीकरण कर रहे हैं और क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतें अत्यधिक मंद हो रही हैं अथवा कीमत में वृद्धि को रोक रहे हैं, जो कि अन्यथा अत्यधिक हो जाती, प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान लागत और कीमत में हुए परिवर्तन पर विचार किया है और घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित एनआईपी की तुलना आयात कीमतों के साथ की है।

53. याचिकादाताओं ने दावा किया है कि उत्पादन की लागत का परिकलन, 100% क्षमता उपयोग को ध्यान में रख कर उत्पादन की अनुकूलतम लागत पर किया है क्योंकि उत्पादन की कम मात्रा के कारण वास्तविक लागत बहुत अधिक है। आयातों के प्रचलित पहुंच मूल्य को ध्यान में रखते हुए विक्रियों की लागत की तुलना बिक्री कीमत के साथ की गई है, जैसा कि नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

क्रमांक	विवरण	यूनिट	रेसिन	सम्मिश्रण
1.	विक्रियों की लागत (वास्तविक)	रुपए/कि.ग्रा.	***	***
2.	विक्रियों की लागत (अनुकूलतम)	रुपए/कि.ग्रा.	***	***
3.	विक्री कीमत	रुपए/कि.ग्रा.	***	***
4.	पहुंच कीमत	रुपए/कि.ग्रा.	94.49	157.30

54. यह नोट किया जाता है कि -

(क) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत, उसकी विक्रियों की अनुकूलतम और वास्तविक लागत से काफी कम है।

(ख) आयातों का पहुंच मूल्य, विक्रियों की वास्तविक लागत और बिक्री की अनुकूलतम लागत से कम है।

(ग) यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग लागत को वसूल करने में असमर्थ रहा है और कम कीमत के आयातों के कारण बिक्री कीमतें लाभप्रद नहीं हैं। इस प्रकार आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का न्यूनीकरण कर रहे हैं।

(3) कम कीमत पर बिक्री

55. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री करने से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की भी जांच की है। इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित की गई एनआईपी की तुलना, महानिदेशक, प्रणाली के कारोबार-वार आयात आंकड़ों के अनुसार आयात की पहुंच कीमत के साथ की गई है। इस प्रकार से निर्धारित एनआईपी निम्नानुसार है:-

क्रमांक	विवरण	इकाई	रेसिन	सम्मिश्रण
चीन के पीआर				
1	आयात मात्रा	मीट्रिक टन	60,274	645
2	गैर-अशुभ कीमत	रुपये प्रति किलोग्राम	***	***
3	उतरा हुआ मूल्य	रुपये प्रति किलोग्राम	94.23	160.01
4	मूल्य अधोहस्ताक्षरी	रुपये प्रति किलोग्राम	***	***
5	मूल्य अधोहस्ताक्षरी	%	***	***
6	मूल्य अधोहस्ताक्षरी	रेंज	50-60	15-25
कोरिया आरपी				
1	आयात मात्रा	मीट्रिक टन	12,204	238

2	गैर-अशुभ कीमत	रुपये प्रति किलोग्राम	***	***
3	उत्तरा हुआ मूल्य	रुपये प्रति किलोग्राम	95.79	149.97
4	मूल्य अधोहस्ताक्षरी	रुपये प्रति किलोग्राम	***	***
5	मूल्य अधोहस्ताक्षरी	%	***	***
6	मूल्य अधोहस्ताक्षरी	रेंज	45-55	25-35

56. यह देखा गया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमतें, घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित एनआईपी से कम हैं और इस प्रकार ये घरेलू कीमतों पर कम कीमत पर बिक्री करने के प्रभाव डाल रही हैं।

घरेलू उद्योग के आर्थिक प्राचल

57. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 में उल्लिखित प्रावधान में क्षति का निर्धारण करने में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच करना निहित है। इसके अतिरिक्त नियमावली में यह भी प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों के प्रभाव की जांच करने में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों और सूचकों का तथ्य परक और निष्पक्ष जांच करना शामिल है, जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही इनमें बिक्रियों में वास्तविक और संभावित गिरावट, लाभ, आउटपुट, बाजार के हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर प्रतिलाभ अथवा क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, माल सूचियां, रोजगार, वेतन, संवृद्धि और पूँजीगत निवेश जुटाने की क्षमता भी शामिल है। घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन की जांच करने से पता चलता है कि घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है। तदनुसार घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक प्राचलों का विश्लेषण किया गया है, जो कि निम्नानुसार है।

58. याचिकाकर्ता में से एक नया उद्योग है और उसने अप्रैल 2017 में अपना व्यावसायिक उत्पादन शुरू कर दिया है और अन्य याचिकाकर्ता ने अभी उत्पादन शुरू नहीं किया है। वर्तमान जांच के उद्देश्य से पीओआई के लिए आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण किया गया है और पीओआई की छह तिमाहियों के लिए रुक्णान देखे गए हैं।

(क) उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्रियां

59. घरेलू उद्योग ने ऐसी सुविधाएं स्थापित की हैं, जिनसे वे सीपीवीसी रेसिन और सीपीवीसी सम्मिश्रण का विनिर्माण कर सकते हैं। सीपीवीसी रेसिन को बाजार में बेचा जा सकता है अथवा उसे सम्मिश्रण में परिवर्तित किया जा सकता है और उसके बाद उसे बेचा जा सकता है। संयंत्र के क्षमता उपयोग का परिकलन करने के लिए याचिकादाताओं ने सम्मिश्रण के उत्पादन को उचित रूप से परिवर्तित किया है और उससे सदृश रेसिन उत्पादन प्राप्त किया है, जिसका उपयोग घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन का विश्लेषण करने के लिए किया गया है। इसके ब्यौरे नीचे तालिका में दर्शाए गए हैं।

क्रमांक	विवरण	क्षमता मी.टन	सदृश रेसिन का उत्पादन मी.टन	क्षमता उपयोग मी.टन	वास्तविक बिक्रियां मी.टन
1	2017-18 तिमाही 1	2,500	***	***	***
2	2017-18 तिमाही 2	2,500	***	***	***
3	2017-18 तिमाही 3	2,500	***	***	***

4	2017-18 तिमाही 4	2,500	***	***	***
5	2018-19 तिमाही 1	2,500	***	***	***
6	2018-19 तिमाही 2	2,500	***	***	***
7	जांच अवधि (अप्रैल, 2017 से सितंबर, 2018)	15,000	***	***	5848

60. यह देखा गया है कि -

- (1) घरेलू उद्योग ने हाल ही में नई क्षमता स्थापित करने में निवेश किया है। रेसिन और सम्मिश्रण के लिए इन क्षमताओं का पृथक रूप से अभिज्ञात किया जा सकता है। पीओआई के सभी तिमाहियों के दौरान क्षमता समान बनी हुई है।
- (2) इसके अलावा, दूसरा याचिकाकर्ता 27,000 मी.टन की क्षमता स्थापित कर रहा है जिसे अभी शुरू करना है।
- (3) तिमाही आधार पर तिमाही में देखे जाने पर उत्पादन और क्षमता उपयोग में वृद्धि होती है। हालांकि, विशेष रूप से विषय वस्तुओं की बढ़ती मांग को देखते हुए सुधार की गुंजाइश है।

(ख) लाभ, पीबीआईटी, निवेश पर प्रतिलाभ और नकदी प्रवाह

61. वास्तविक लाभ/हानि, नकदी लाभ, पीबीआईटी और निवेश पर प्रतिलाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन का विश्लेषण, नीचे तालिका में दिया गया है। संयंत्र एक नई सुविधा है, जिसमें उत्पादन जांच अवधि के दौरान शुरू हुआ था और उत्पादन की मात्रा अनुमानों से कम थी, लाभ के प्राचलों का निर्धारण, जांच अवधि के दौरान 100% क्षमता उपयोग को ध्यान में रख कर किया गया है, जो कि निम्नानुसार है:-

क्र. स.	अवधि	विक्री की लागत	विक्रय मूल्य	लाभ /हानि	लाभ /हानि	नकद लाभ	पीबीआईटी	लागत पर लाभ
		इंडेक्स किए गए	रेज					
		रुपए/कि. ग्रा.	रुपए/कि. ग्रा.	रुपए/कि.ग्रा.	रुपए/कि.ग्रा.	लाख रुपए	लाख रुपए	%
1	2017-18 त्रिमास 1	100	100	(100)	(100)	100	100	0-10%
2	2017-18 त्रिमास 2	97	88	(164)	(164)	(217)	(289)	(0-10)
3	2017-18 त्रिमास 3	96	92	(126)	(126)	(27)	(55)	(0-10)
4	2017-18 त्रिमास 4	97	92	(131)	(131)	(55)	(90)	(0-10)
5	2018-19 त्रिमास 1	98	93	(142)	(142)	(119)	(284)	(0-10)
6	2018-19 त्रिमास 2	99	95	(136)	(136)	(93)	(252)	(0-10)

62. यह देखा गया है कि -

- (क) जांच अवधि के आंकडे दर्शते हैं कि सीपीबीसी रेसिन और सम्मिश्रण दोनों की विक्री लागत, उनकी संबंधित विक्री कीमत से अधिक है। पाटिट आयातों की उपस्थिति के कारण घरेलू उद्योग उत्पादन की लागत से अधिक कीमत प्राप्त करने में समर्थ नहीं रहा है।

(ख) घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटे हो रहे हैं। जांच अवधि के दौरान पीबीआईटी, नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ, कर पूर्व लाभ और लाभ प्रति यूनिट सभी नकारात्मक रहे हैं। त्रैमासिक विश्लेषण भी यही प्रवृत्ति दर्शाता है।

(ग) रोजगार, वेतन और उत्पादकता

63. प्राधिकारी ने रोजगार, वेतन और उत्पादकता से संबंधित सूचना की जांच की है, जो कि निम्नानुसार है:-

प्राचल	यूनिट	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***
वेतन	लाख रुपए	***
उत्पादकता प्रति दिवस	मीट्रिक टन / दिन	***
उत्पादकता प्रति कर्मचारी	मीट्रिक टन / नग	***

64. यह देखा गया है कि उत्पादन में वृद्धि होने से उत्पादकता प्रति कर्मचारी में सुधार हुआ है।

(घ) पाटन की मात्रा

65. जांच अवधि के लिए संबद्ध देशों से उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक हैं।

(ङ) संबृद्धि

66. प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में उत्पाद की मांग से कम क्षमताओं के साथ देश में एक नया उत्पादक होने के बावजूद घरेलू उद्योग उत्पादन, विक्रियों और क्षमता उपयोग के अनुकूलतम स्तरों तक पहुंचने में समर्थ नहीं रहा है। आयातों ने घरेलू उद्योग को स्वयं को स्थापित करने से रोका है।

(च) पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता

67. देश में पर्याप्त मांग रखने वाले उत्पाद में भारत में नए निवेश के बावजूद भी घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन बदतर है। नकारात्मक लाभप्रदता, नकदी लाभ, नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ, पीबीआईटी और लाभ के साथ नितलीय बाजार हिस्से से ऐसा पता चलता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण क्षेत्र के लिए पूंजीगत निवेश बढ़ाने के घरेलू उद्योग की क्षमता गंभीर रूप से प्रभावित हुई है। इसके अतिरिक्त एक याचिकादाता कंपनी ने बढ़ रहे व्यय के चरण में पहुंचने के बाद अपने निवेश रोक दिए हैं।

(छ) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

68. घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत और एनआईपी से वास्तविक रूप से कम कीमतों पर आयात हो रहे हैं। चूंकि घरेलू उद्योग को केवल आयात से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है और घरेलू उद्योग देश में एक नया उत्पादक है, इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा पेश की जा रही कीमतों के लिए एक मात्र आयात कीमत उत्तरदायी है।

(ज) याचिकादाताओं द्वारा नए निवेशों को प्रभावित करने वाले आयात

69. मेसर्ज केम वन केप्लास्ट प्राईवेट लिमिटेड ने यह तर्क देते हुए पाटन-रोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है, कि उत्पाद का पाटन कंपनी को उत्पाद में निवेश शुरू करने से रोक रहा है। कंपनी ने संयंत्र की स्थापना करने के अपने इरादे को सिद्ध करने के लिए निगमन प्रमाण पत्र (दिनांक 19.11.2015), मेमोरांडम एंड आर्टिकल्स आफ

एसोसिएशन और उद्यमिता ज्ञापन प्रस्तुत किए हैं। कंपनी ने अपने निवेश के बारे में सूचना प्रस्तुत की है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित विवरण निहित हैं:-

(क) कंपनी की प्रकृति और स्वामित्व का ढांचा - संयुक्त उद्यम - 50% केमप्लास्ट सनमर लिमिटेड (सीएसएल) 50% केम वन एसएएस, फ्रांस

(ख) नियोजित उत्पाद क्षमता -

- (1) सीपीबीसी रेसिन का 22,000 टीपीए और
- (2) सीपीबीसी सम्मिश्रण का 27,000 टीपीए

(ग) एमओईएफ एंड सीसी ने मई, 2017 में पर्यावरण संबंधी स्वीकृति प्रदान कर दी है।

(घ) सकल निवेश - लगभग 402 करोड़ रुपए (बीओबी केप्स द्वारा परियोजना मूल्यांकित)

(ड) उत्पादन शुरू होने के लिए मूल लक्ष्य तारीख : अप्रैल, 2020

(च) संयंत्र की अवस्थिति - कराईकल, पुदुचेरी

(छ) कच्चे माल का स्रोत

(ज) मशीनों के स्रोत - पर्याप्त रूप से (लगभग 80%) भारत के भीतर

(झ) उत्पादन शुरू होने के लिए आवश्यक समय - 30 महीने

(ज) परियोजना के क्रियान्वयन में विलंब होने के कारण - चीन द्वारा अनुचित कीमतों पर पाठन।

70. कंपनी ने यह तर्क दिया है कि कीमत में गिरावट सहयोजित कच्ची सामग्री की लागत में समान गिरावट आना नहीं है। कंपनी संयंत्र की स्थापना करने के लिए आगे की कार्रवाई करने के लिए तैयार है। तथापि, उसने कीमतों में अत्यधिक गिरावट आने और देश में पाठन होने के कारण जिससे कि निवेश की अर्थक्षमता को खतरा है, प्रक्रिया को रोके रखा है। कंपनी ने हाल ही में कंपनी की अनेक आंतरिक बैठकों में निवेश करने की आगे की कार्रवाई करने के मुद्दे पर परिचर्चा की है, लेकिन ऐसे पाठन के परिणाम स्वरूप अर्थक्षमत कीमत स्तरों पर विचार करने के बाद सदैव कंपनी को निवेश रोकने पर विवश होना पड़ा है।

(झ) **क्षति का समग्र मूल्यांकन**

71. संबद्ध उत्पाद के आयातों और घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन की जांच से पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन शुरू करने के बावजूद भी विचाराधीन उत्पाद के आयातों में वृद्धि हुई है। वास्तव में आयात, घरेलू उद्योग की उत्पादन की लागत और क्षति रहित कीमत से भी कम कीमत पर हो रहे हैं। इसके परिणाम स्वरूप कीमत में अत्यधिक कटौती हो रही है और घरेलू उद्योग की कीमतों पर न्यूनीकरण का प्रभाव पड़ा है। घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में यह देखा गया है कि बाजार में अत्यधिक पाठित आयातों की उपलब्धता को देखते हुए अत्यधिक प्रयास करने के बावजूद भी घरेलू उद्योग अपनी समग्र क्षमता को बाजार में उचित कीमतों पर बेच नहीं सका है। यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग का 100% क्षमता उपयोग होने की परिकल्पना करने पर भी उसे कीमत क्षति के प्रतिकूल प्रभाव का तुकसान उठाना पड़ रहा है। घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटे, नकदी घाटे उठाने पड़े हैं और उसे निवेशों पर नकारात्मक प्रतिलाभ हुआ है। घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन पर उसके विद्यमान होने का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और उसका कार्य-निष्पादन लक्षित/अनुमानित स्तरों से काफी कम है। घरेलू उद्योग को उसके कार्य-निष्पादन में आर्थिक क्षति हुई है और देश में उत्पाद के पाठन होने से उसकी अवस्थापना में मंदी आई है।

ज. **अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध**

72. आर्थिक क्षति के विद्यमान होने और अवस्थापना को क्षति से मंदी होने की जांच करने पर प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाठित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव, भारतीय नियमावली और पाठन-रोधी करार के अंतर्गत

सूचीबद्ध अन्य सूचक प्राचलों की यह देखने के लिए जांच की है कि क्या पाटित आयातों से भिन्न अन्य कोई कारक भी घरेलू उद्योग की क्षति के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

(क) तृतीय देशों से आयातों की मात्रा और कीमतें

73. यह नोट किया जाता है कि तृतीय देशों से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। तथापि, तृतीय देशों से आयात कीमत, वास्तविक रूप से संबद्ध देशों से आयात कीमतों से अधिक है। जबकि तृतीय देशों से आयात घरेलू उद्योग को हो रही क्षति का कारण नहीं हैं, संबद्ध देशों और वाकी विश्व से आयातों की कीमतों के बीच अत्यधिक अंतर है, कुल आयातों में संबद्ध देशों का हिस्सा बढ़ा है, संबद्ध देशों से कीमतों में अत्यधिक गिरावट आई है, जबकि वाकी विश्व में आयात कीमतों ने समानुपातिक गिरावट दर्शाई है, न केवल उन्होंने पाटन स्थापित किया है, बल्कि यह भी दर्शाया है कि उपभोक्ता काफी अधिक कीमतों पर और अत्यधिक मात्रा में वाकी विश्व से आयात कर रहे हैं।

(ख) मांग में संकुचन

74. समग्र क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है। इस प्रकार मांग में संकुचन घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है।

(ग) खपत के पेटर्न में परिवर्तन

75. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत के पेटर्न में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ है और इसलिए यह घरेलू उद्योग को हुई आर्थिक क्षति का कारण नहीं हो सकता है। वास्तव में उत्पाद की बढ़ रही मांग से ऐसा पता चलता है कि उत्पाद के पक्ष में खपत के पेटर्न में परिवर्तन हो रहा है।

(घ) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापारिक प्रतिबंधित पद्धतियां और प्रतिस्पर्धा

76. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी कोई व्यापारिक प्रतिबंधित पद्धति नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

(ङ) प्रोद्योगिकी में विकास

77. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पाद के उत्पादन की प्रोद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस प्रकार प्रोद्योगिकी में विकास को घरेलू उद्योग की क्षति कारक नहीं माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त याचिकादाता ने उत्पाद का उत्पादन करने के लिए एक नया संयंत्र स्थापित किया है।

(च) निर्यात निष्पादन

78. याचिकादाताओं ने विचाराधीन उत्पाद के निर्यात नहीं किए हैं। इसलिए घरेलू उद्योग ने निर्यातों के कारण क्षति होने का दावा नहीं किया है।

(छ) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित किए और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों का कार्य-निष्पादन

79. याचिकाकर्ता एक बहुउद्देशीय कंपनी है, हालांकि, लागत और वित्तीय को अलग किया गया है और केवल पीयूसी के लिए माना जाता है और वर्तमान जांच के लिए विश्लेषण किया गया है। घरेलू उद्योग में दावा किया गया चोट अन्य उत्पादों के कारण नहीं है।

झ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

80. जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा यथा निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की क्षति रहित कीमत की तुलना, संबद्ध देशों से निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है और इस प्रकार से आकलित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:-

तालिका

क्र. स.	निर्माता / निर्यातक	जमीन की कीमत	एनआईपी	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन	
		डालर/ मैट्रिक टन	डालर/ मैट्रिक टन	डालर/ मैट्रिक टन	%	सीमा	
चीन जनवादी गणराज्य							
		रेसिन					
1	शानडोंग गाओकिसन केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	50-60	
2	शानडोंग पुज्जे रबड एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	60-70	
3	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	50-60	
4	वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	55-65	
5	शानडोंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	60-70	
		सम्मिश्रण					
1	शानडोंग गाओकिसन केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	10-20	
2	शानडोंग पुज्जे रबड एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड	-	-	-	-	-	
3	शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	-	-	-	-	-	
4	वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड	-	-	-	-	-	
5	शानडोंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	30-40	
		कोरिया आरपी					
	निर्माता / निर्यातक	जमीन की कीमत	NIP	चोट लगना	चोट लगना	चोट लगना	
		डालर/ मैट्रिक टन	डालर/ मैट्रिक टन	डालर/ मैट्रिक टन	%	सीमा	
		रेसिन					
1	सभी अन्य उत्पादक निर्यातक	***	***	***	***	50-60	
		सम्मिश्रण					
2	सभी उत्पादक निर्यातक	***	***	***	***	25-35	

ब. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

81. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्यतः पाटन-रोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है, ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा कायम हो सके जो देश के सामान्य हित में है। इसलिए, पाटन-रोधी उपाय लागू करने से किसी भी तरीके से संबद्ध देश से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इनसे उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

82. यह माना जाता है कि पाटन-रोधी शुल्क उपाय लागू करने से संबद्ध वस्तुओं के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद की कीमत स्तरों पर प्रभाव पड़ सकता है और उसके परिणामस्वरूप इस उत्पाद की सापेक्षित प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ेगा। तथापि, ऐसे पाटन-रोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा कम नहीं होगी, विशेषकर यदि पाटन-रोधी शुल्क की राशि उस सीमा तक प्रतिबंधित रहती है जो कि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए आवश्यक हो। इसके विपरीत पाटन-रोधी उपाय करने से पाटन की पद्धतियों द्वारा अनुचित लाभ प्राप्त करने की अनुचित प्रक्रिया समाप्त होगी, घरेलू उद्योग में होने वाली गिरावट रूकेगी तथा उपभोक्ताओं की व्यापक पसंद की संबद्ध वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ाने में सहायता मिलेगी। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो अथवा उससे अधिक स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

ठ. निष्कर्ष

83. हितवद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए गए निवेदनों तथा इस जांच परिणाम में दर्ज किए गए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों और पाटन की स्थिति और परिणामी क्षति का उपरोक्त विश्लेषण करने के आधार पर प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि -

- (1) भारत को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के नियर्तिक देशों के घरेलू बाजार में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमतों पर नियर्ति किए गए हैं।
- (2) संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं का पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है और पर्याप्त है।
- (3) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वस्तुगत विलम्बन का नुकसान हो रहा है।
- (4) जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए अनंतिम पाटन-रोधी शुल्क लागू किए जाने की आवश्यकता है।

ड. सिफारिशें

84. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच शुरू की गई थी और इसकी सूचना सभी हितवद्ध पक्षकारों को दी गई थी तथा नियर्तिकों, आयातकों और अन्य हितवद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सार्थक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच शुरू की गई थी और उसका संचालन किया गया था तथा सार्थक पाटन मार्जिन के साथ-साथ ऐसे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि हो जाने पर, प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटन और क्षति के प्रतिकरण के लिए पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने की आवश्यकता है। इसलिए प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं कि नीचे वर्णित रूप में और तरीके से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयात पर अनन्तिम पाटन-रोधी शुल्क लगाना आवश्यक है, ताकि जांच के पूरा होने तक संबद्ध वस्तुओं के पाटन द्वारा हो रही क्षति की रोकथाम की जा सके।

85. इसलिए प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और निर्धारित प्रारूप और तरीके से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर अनंतिम पाटन-रोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं।

86. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले कमतर शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में से कम मार्जिन के बराबर अनन्तिम पाटन-रोधी शुल्क को लागू करने की सिफारिश करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार, संबद्ध देश से मूल रूप से होने

वाले अथवा किए जाने वाले निर्यात के लिए संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की गई अधिसूचना की तारीख से संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य और नीचे शुल्क तालिका के कॉलम 8 में निर्दिष्ट राशि के बीच अंतर के अनन्तिम पाटन-रोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं, बर्ते कि कॉलम 8 में निर्दिष्ट मूल्य, पहुंच मूल्य से कम हो। इस अधिसूचना के प्रयोगनार्थ आयात का पहुंच मूल्य सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1962 के तहत सीमा शुल्क द्वारा निर्धारित मूल्यांकन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9, 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्क का लागू होने वाला स्तर लागू होगा।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	एचएस कोड	माल का विवरण	मूल देश / निर्यात	उत्पादक	विशिष्टता	प्रति टन अमरीकी डालर में राशि
1	2	3	4	5	6	7
1	39042110	क्लोरीनेटेड पॉलीविनाइल क्लोराइड (सीपीवीसी) – आगे सम्मिश्रण में प्रसंस्कृत हो अथवा नहीं		शानडोंग गाओक्सिन केमिकल कंपनी लिमिटेड	रेसिन	2,066
	39042190			शानडोंग पुज्जे रबड़ एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड	सम्मिश्रण	2,609
2	39042210			शानडोंग पुज्जे रबड़ एंड प्लास्टिक कंपनी लिमिटेड	रेसिन	2,072
	39042290			शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	सम्मिश्रण	2,849
3	39041090	चीन जनवादी गणराज्य		शानडोंग क्सूई न्यू मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	रेसिन	2,097
	39049000			वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड	सम्मिश्रण	2,849
4				वेलफांग सनडो केमिकल कंपनी लिमिटेड	रेसिन	2,031
					सम्मिश्रण	2,849
5				शानडोंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड	रेसिन	2,057
					सम्मिश्रण	2,591
6		अन्य सभी उत्पादक निर्यातक			रेसिन	2,165
					सम्मिश्रण	2,849
7		कोरिया गणराज्य	सभी निर्माता निर्यातक		रेसिन	2,031

					सम्मिश्रण	2,849
--	--	--	--	--	-----------	-------

व. आगे की प्रक्रिया

87. प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित करने के बाद नीचे दी गई प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा:-

- (क) सभी इच्छुक पार्टियों को आमंत्रित किया जाता है कि वे अपने विचारों को बना सकते हैं, प्रारंभिक निष्कर्षों पर, मौखिक सुनवाई के समय जाना जाता है।
- (ख) प्राधिकरण सभी इच्छुक पक्षों को लिखित प्रस्तुतियाँ के बाद जांच के लिए अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर देने के लिए नियम 6 (6) के संदर्भ में मौखिक सुनवाई करेगा।
- (ग) प्राधिकरण आवश्यक समय सीमा तक आगे सत्यापन का आयोजन करेगा।
- (घ) प्राधिकरण अंतिम निष्कर्षों को अधिसूचित करने से पहले एंटी-डंपिंग नियमों के अनुसार आवश्यक तथ्यों का खुलासा करेगा।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं महानिदेशक

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th July, 2019

Subject: Preliminary Findings in Anti-dumping investigation concerning imports of "Chlorinated Polyvinyl Chloride (CPVC) Resin- whether or not further processed into compound" from China PR and Korea RP

No. 6/3/2019-DGTR.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof, as amended from time to time (hereinafter referred as the AD Rules);

A. BACKGROUND OF THE CASE

1. M/s. DCW Limited and M/s Kem One Chemplast Pvt. Ltd (hereinafter referred to as the “applicants” or “domestic industry”) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) in accordance with the Act and the Rules, for initiation of anti-dumping investigation and imposition of anti-dumping duty on imports of “Chlorinated Polyvinyl Chloride resin- whether or not further processed into compound” (hereinafter also referred to as the subject goods) from China PR and Korea RP (hereinafter also referred to as the subject countries).
2. Whereas, the Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants, issued a Notification No. 6/3/2019-DGTR dated 28th March, 2019, published in the Gazette of India, initiating the subject investigation in accordance with the Rule 5 of the above Rules to determine existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from subject countries and to recommend an amount of antidumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic industry.

B. JUSTIFICATION FOR PRELIMINARY FINDINGS

3. The applicant domestic industry has requested for recommendation for imposition of interim ADD in view of steep increase in import volumes and reduction in import price (without proportionate reduction in cost of production) particularly during the 3rd and 4th quarter of 2018-19. There is continued financial losses and significant accumulated losses since commencement of commercial production. The producer /exporters from the subject countries have become more aggressive in dumping the subject goods in India.

4. . Rule 12, pertaining to preliminary findings, provides that:

“The designated authority shall proceed expeditiously with the conduct of the investigation and shall, in appropriate cases, record a preliminary finding regarding export price, normal value and margin of dumping, and in respect of imports from specified countries, it shall also record a further finding regarding injury to the domestic industry and such finding shall contain sufficiently detailed information for the preliminary determinations on dumping and injury and shall refer to the matters of fact and law which have led to arguments being accepted or rejected.”

5. The Authority examined the request and the information furnished by the domestic industry for seeking immediate relief by way of provisional duties. In view of the above provision, and the facts put forward by the applicants, the Authority, considers it an appropriate case for consideration of the preliminary findings. The detailed examination of all the data/documents/submissions made available to the Authority is given hereunder-

C. PROCEDURE

6. The procedure described herein below has been followed with regard to the subject investigation:

- The Authority notified the Embassy of the subject countries in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra and bilateral commitments.
- The Authority issued a notification dated 28th March, 2019 published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning import of subject goods.
- The Embassy of China and Korea in India were informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2) of the Rules with a request to advise the exporters/producers from China PR and Korea RP to respond to the questionnaire within prescribed time limit.
- The Authority sent communication to the following known producers/exporters in the subject countries to elicit relevant information in accordance with Rule 6(4) of the Rules-

Sl. No.	Name of Producers/Exporters
1.	Shandong Gaoxin Chemical Co., Ltd., China
2.	Hangzhou Electrochemical Group Co.,Ltd., China
3.	Shandong Yada New Material Co Ltd, China
4.	Novista, China
5.	Shandong Xuye New Materials Co., Ltd, China
6.	Sundow Polymers Co. LTD., China
7.	Shandong Xian sheng New Materials Technology Co.Ltd, China
8.	Hanwha Chemical Corporation, Korea

v. In response to the above notification, following exporters/producers have responded by filing exporter questionnaire response:

Sl. No.	Name of Producers/Exporters
1.	Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd, China PR
2.	Shandong Pujie Rubber and Plastic Co. ltd, China PR
3.	Hangzhou Electrochemical New Material Co. Ltd, China PR
4.	Weifang Sundow Chemical Co. Ltd, China PR
5.	Shandong Xuye New Materials Co. Ltd, China PR
6.	Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd, China PR
7.	Hanwha Chemical Corporation, Korea RP
8.	Hanwha Corporation, Korea RP

vi. The Authority sent communication to the following known importers/ users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules.

Sl. No.	Name of Importers/Traders/Users
1.	Ala Chemicals Limited
2.	Apollo Pipes Ltd.
3.	Ajay Industrial Corporation Limited
4.	Ajay Polymers
5.	Bothara Agro Equipment Pvt. Ltd.
6.	Desana Poly Plastic Industries
7.	Lubrizol Advanced Materials India Pvt. Ltd.
8.	Basil Prompt Vinyl Private Limited
9.	Flowkem Poly Plast Private Limited. Plot
10.	Kankai Pipes & Fittings Pvt. Ltd.,
11.	Hil Limited
12.	HP International
13.	Karan Polymers Pvt. Ltd.
14.	Kelvin Plastic Pvt. Ltd.
15.	Kisan Mouldings Limited
16.	Krishi Polymers Pvt. Ltd.
17.	Neoseal Adhesive Pvt. Ltd.
18.	Pidilite Industries Limited
19.	Precision Plastic Industries Pvt. Ltd.
20.	Param Polymers Private Limited
21.	Prince Pipes & Fittings Pvt. Ltd.
22.	Prince Swr Systems Pvt. Ltd.
23.	Pushp Global Company
24.	R C Plasto Tanks & Pipes Pvt. Ltd.,
25.	Reva Poly Plast
26.	Sagar Polytechnik Ltd.
27.	Spectra Pipes Pvt. Ltd.
28.	Star Industries
29.	Star Pvc Pipes And Fittings Pvt. Ltd.
30.	Subray Catal Chem Pvt.Ltd.
31.	Sudhakar Irrigation Systems Private Limited
32.	Sumo Polyplast Pvt. Ltd.
33.	The Supreme Industries Limited
34.	Surya Roshni Limited
35.	Vectus Industries Limited
36.	Waterflo Piping System
37.	Watertec (India) Pvt. Ltd.

38.	Abk Industries
39.	Ace Poly Plast Pvt. Ltd.
40.	Champion Commercial Co. Ltd.
41.	Gourishanker Polymers
42.	H Saleix & Company
43.	Mas Additives Pvt. Ltd.
44.	Mayur Dyes & Chemical Corporation
45.	Meet Marketing (India) Pvt. Ltd.
46.	Navyug Chemicals Pvt. Ltd.
47.	Osho Polymers
48.	Overseas Polymers Pvt. Ltd.
49.	Polmann India Ltd.
50.	Prayag Polymers (P) Ltd.
51.	Prince Marketing
52.	Sai Exim
53.	Salasar Impex Pvt. Ltd.
54.	Shreeji Impex
55.	Sushila Parmar International Pvt. Ltd.
56.	Synergy Industriez
57.	Astral Polytechnik Ltd.

vii. In response to the initiation notification, following Importer and users have submitted questionnaire responses:

1. Sushila Parmar International Private Limited
2. HIL Limited
3. Vectus Industries Limited
4. Prince Pipes and Fittings Ltd.
5. Basil Prompt Vinyl Private Limited

viii. Following interested party have also filed submission in response to the initiation notification:

1. HP International
2. Precision Plastic Industry Private Limited
3. Mas Additives Private Limited
4. Astral Polytechnik Ltd.

ix. Authority also sent initiation notification to the following Associations asking them to intimate all their members regarding the initiation of investigation and submit response/comments, if any:

Sl. No.	Name of Association
1.	All India Plastic Industries Association
2.	ization of Paper Processor of India (OPPI)

3.	Maharashtra PVC Pipe Manufacturers Association.
4.	All India Plastic Manufacturers Association
5.	Andhra Pradesh Plastics Manufacturers Association
6.	TN PVC Manufacturers Association

- x. None of the associations responded to the above notification. However, a letter was received from Alkali Manufacturers Association with a request for an urgent help for safeguarding the investments already made by the Indian Producers and for reinstating the industry's confidence so that the further investments could be made.
- xi. Information provided by the petitioners and other interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to the petitioners or the other interested parties. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xii. The Non-Injurious Price (hereinafter referred to as 'NIP') based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-Dumping Rules has been worked out so as to ascertain injury margin.
- xiii. The Period of Investigation for the purpose of the present investigation is from 1st April, 2017 to 30th September, 2018 (18 Months). The injury investigation period has however, been considered as the period from 2014-15, 2015-16, 2016-17 and the POI. The period of investigation has been divided into quarters for the purpose of injury analysis in view of shorter length of data of domestic industry.
- xiv. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and Directorate General of Systems (DG Systems) to arrange details of transaction-wise imports of subject goods for the past three years, including the POI. The Authority has examined import data procured from DGCI&S and Director General Systems and relied upon DG Systems data in the present investigation.
- xv. The Authority has considered the arguments raised and information provided by all the interested parties till this stage, to the extent the same are supported with evidence and considered relevant to the present investigation. The Authority will further examine the evidentiary documents submitted by the interested parties subsequent to the preliminary findings which will form the basis for conclusions at the time of final finding determination.
- xvi. *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and accepted by the Authority.
- xvii. The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is 1 US \$= Rs. 66.61

D. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- 7. The product under consideration (PUC) in the present investigation is "**Chlorinated Polyvinyl Chloride Resin (CPVC) - whether or not further processed into compound**".
- 8. CPVC is produced by chlorination via free radical chlorination reaction of Polyvinyl Chloride resin (Suspension PVC/ Mass PVC) and is significantly more flexible and can withstand higher temperatures than standard PVC. The chlorine content may vary from manufacturer to manufacturer. Various additives are introduced into the resin (CPVC compounding) in order to make the material processable. These additives may consist of stabilizers, lubricants, impact modifiers, processing aids, pigments.
- 9. The petitioners have stated that CPVC is ideally suited for self-supporting constructions where temperatures go up to 200 °F (90 °C). CPVC exhibits fire-retardant properties. It is very difficult to ignite and tends to self-extinguish when not in direct contact of flame. It is used as a material for water piping systems in residential as well as commercial construction because it can withstand corrosive water at temperatures of 40 °C to 50 °C (104 °F to 122 °F) or higher. It is used in hot and cold-water plumbing distribution both at residential and commercial areas, fire protection, reclaimed water piping (purple pipe), chilled water piping, Hydronic piping and distribution (radiators, fan coils, etc.) and is used in many industrial and process piping application.

10. PUC is significantly **ductile**, allowing greater **flexure** and crush resistance. Additionally, the mechanical strength of CPVC makes it a viable product to replace many types of metal pipe in conditions where metal's susceptibility to **corrosion** limits its use. CPVC is broadly classified into two grades, namely (a) Pipe grade and (b) Fitting grade on the basis of end use applications. Further, the petitioner has claimed that PUC can be produced through two processes, namely dry process and wet process. However, the petitioner has claimed that there is no difference in these forms of products on account of different processes or different grades.
11. The product under consideration is classified under Chapter 39 of Customs Tariff and the import data received from DGCI&S and DG Systems shows that the product has been imported under 39042110, 39042190, 39042210, 39042290, 39041090 and 39049000. The Customs classification, however, is indicative only and not binding on the scope of the proposed investigation.
12. The petitioners have argued that all forms of CPVC essentially employ the same technology & follow essentially the same production process, are produced using the same basic raw materials and follow the same pricing. It has been stated that the difference between CPVC resin and compound is only on the basis of the fact that additional ingredients are added to CPVC resin to form a compound. They have further submitted that cost difference between CPVC resin and compound arises primarily out of additional raw materials used for making compound and not any serious manufacturing. The petitioners have insisted that CPVC resin and compound are one article.
13. The responding foreign producers/exporters from China and Korea have not disputed the scope of PUC. However, one importer and user has argued that resin and compound should not be considered as one product within the scope of one investigation on the grounds that CPVC compound is the next step after the production of CPVC resin and that production process for compound is highly technical. This is the reason that many exporters/producers of CPVC resin are outsourcing the compounding activities. The production process of CPVC compound is different from CPVC resin and the two have cost & price difference in the range of 30-100%. They have also referred to the past investigations relating to PVC suspension & PVC Paste, Pencillin-G & 6-APA where these products were treated as different articles though they were part of one line of manufacturing. They have argued that resin and compound cannot be considered as one article.
14. Rule 2 (d) provides that-

“like article” means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such an article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;
15. The Authority has examined the submissions of interested parties. It is noted that different forms of CPVC are produced using the same basic raw materials. It is also noted that different forms have broadly similar manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification. While it is true that the CPVC compound requires additional ingredients to be added to resin to make the compound, the same are only incremental and do not alter the basic properties of the product. It is also noted that the sole purpose of making CPVC resin is to make the CPVC compound before eventual use in making pipes & fittings. As regards reference to past cases, the Authority has in earlier investigations pertaining to Jute products and Glass fiber & article thereof had held the different variants as one PUC. Therefore, the Authority notes that facts of each case are required to be considered in the context of that case. The Authority holds that difference in physical characteristics or prices of different forms cannot make these forms as altogether different products and they are at best relevant for the purpose of ensuring fair comparison only. The Authority holds that the subject goods produced by the domestic industry are the like article to the product imported from subject countries for the purpose of present investigations in terms of the AD Rules.
16. Further, with a view to have a fair comparison of different forms of PUC, the Authority has determined injury margin, dumping margin and injury analysis separately for CPVC Resin and Compound.

E. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

17. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

18. The petition had been filed by M/s DCW Limited. The petition was subsequently supported by M/s. Kem One Chemplast Pvt Ltd and M/s. Meghmani FineChem Ltd. Out of three entities, M/s. DCW Ltd. is the only existing producer of CPVC resin and Compound whereas the two supporters viz. M/s. Kem One Chemplast Pvt Ltd and M/s. Meghmani FineChem Ltd have not yet commenced production. M/s. Meghmani, is only at the concept stage and setting up of the project at conceptual stage that too depending on the conditions of the market, though they

expressed willingness to be part of the petition. As for M/s Kem One, they have finalized the project and have done lot of ground work in setting up of the plant including technology transfer. They have submitted project reports showing cost of production etc. Therefore, the Authority considered M/s DCW Limited and M/s Kem One Chemplast Pvt Ltd as the domestic industry for the purposes of the present investigation.

19. There are some other producers of CPVC compound who are either buying CPVC resin from DCW or importing the resin and processing the same to manufacture CPVC compound largely for captive consumption for making pipes. Companies who do not have manufacturing facilities for CPVC resin but are only compounders making compounds from purchased CPVC resin (indigenously and/or imported) have not been considered as “domestic industry” within the meaning of Rule 2 (b).
20. The petitioner companies are not related to any importer or exporter of subject goods in the subject country, nor have they imported subject goods from subject countries. The petitioners are importing MPVC for manufacturing of CPVC, from countries other than subject countries. The petitioners, M/s. DCW Limited and M/s. Kem One Chemplast Pvt Ltd, satisfy the eligibility criteria of domestic industry under Rule 2 (b) of the Rules and meets the criteria of standing under Rule 5 (3) of the Rules.

F. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN;

NORMAL VALUE

21. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:
 - i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
 - (a) *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.
22. After the initiation, the Authority advised the producers/exporters in China to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status. The Authority sent copies of the supplementary questionnaire to all the known producers/ exporters for rebutting presumption of nonmarket economy in accordance with criteria laid down in Para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China to advise the producers/exporters in China to provide the relevant information.
23. The Authority notes that the known Chinese producers/exporters and the Government of China have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to them to make their submissions in this regard. A number of producers/exporters have responded to the present investigation. However, none of them filed supplementary QR to enable the Authority to examine the prevailing market conditions in China. Further, barring claim of domestic industry, none of the interested parties have provided any other alternative basis, as defined in the Rules, on which normal value can be determined.
24. Following producer exporters from China have filed the exporter questionnaire response-
 - a. Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd.
 - b. Shandong Pujie Rubber and Plastic Co. Ltd.
 - c. Hangzhou Electrochemical New Material Co. Ltd.

- d. Weifang Sundow Chemical Co. Ltd.
- e. Shandong Xuye New Materials Co. Ltd.
- f. Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.

25. In view of the above position and in the absence of rebuttal of non-market economy claim by any Chinese exporting company, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure-I to the Rules for determination of normal value. Para 7 lays down hierarchy for determination of normal value and provides that *normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin*. Thus, the Authority notes that the normal value is required to be determined having regard to the various sequential alternatives provided under Annexure 7. The domestic industry has also argued that the normal value should be considered on the basis of import prices in India from any of the other countries having major share of imports which are not subject matter of alleged dumping.

26. The Authority has relied upon information on import volume and prices of subject goods from all the countries during the POI as available from transaction wise data from DGCI&S and DG Systems. It is noted that while China accounts for 60,918 MT, 26% of total imports of subject goods during POI, the similar level of imports are from Thailand at around 62,282 MT constituting a share of 26.16% of total imports into India. Thailand being a non-subject country with no investigation of AD underway or AD measure in force and with import volume being quite significant, the CIF price is thus representative of price payable in India. The Authority notes that this option of para 7 to construct the normal value of subject goods is appropriate and is representative of normal value of the subject goods. To evaluate the normal value, the Authority has made appropriate adjustments on various elements like ocean freight, port expenses, inland freight, credit cost and marine insurance and bank charges as per its consistent practice adopting norms as is done consistently in similar/analogous situations for arriving at an ex-factory price. The normal value so constructed for preliminary finding at this stage is as mentioned in the dumping margin table below.

KOREA RP

27. Only one producer, namely M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea has filed the Exporter questionnaire response along with its related entity, namely M/s Hanwa Corporation. The questionnaire response filed by the producer and exporter has been examined. It is found that the questionnaire response is not in the form and manner prescribed. For example, Appendix 7 & 8 does not conform to prescribed format, complete details of cost of production of captively produced raw material has not been submitted, uncertified formats, etc. The information submitted by producer exporter is incomplete and not sufficient to enable the Authority to compute the cost of production and thereafter the normal value. Therefore, at this stage, the Authority has decided not to consider the claimed domestic selling prices of the producer.

28. The domestic industry has claimed normal value in Korea to be considered on the basis of the import prices of subject goods in to Korea as the capacities in Korea are recent and large portion of the demand in Korea for the subject goods is still met by the imports. In support of their claim, the petitioners have furnished the sales invoices of M/s Kaneka Corporation, Japan evidencing the export of the subject goods from Japan to Korea.

29. The Authority notes that the approximate demand in Korea is 9000 MT/ annum as per the information available in the public domain. Therefore, Korea imports a large quantity of subject goods to fulfill its domestic demand, as the responding producer/exporter sells only a limited quantity against the domestic demand. Several invoices have been submitted as evidence of the prices towards the domestic selling prices of subject goods in Korea. The Authority has decided to rely upon the said invoices for determination of normal value at this stage. The provisional normal value so calculated is given below in dumping margin table.

EXPORT PRICE

China PR

i. Export Price for (i) Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd, (ii) Shandong Pujie Rubber and Plastic Co. Ltd, (iii) Weifang Sundow Chemical Co. Ltd, (iv) Shandong Xuye New Materials Co. Ltd and (v) Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.

30. The examination of the responses revealed that the information submitted by these producers is largely complete in terms of their export price to India. Therefore, the Authority has relied upon the details of exports as given in

Appendix 3. The Adjustments towards inland freight, ocean freight, handling and customs charges, insurance, credit cost, bank charges and packing cost have been accepted as claimed by the producer exporters for the purpose of the present preliminary finding by the Authority. Accordingly, the provisional export price for PUC (for resin and compound) determined at ex-factory level is shown in the dumping margin table below.

ii. Export Price for (vi) Hangzhou Electrochemical New Material Co. Ltd.

31. M/s. Hangzhou Electrochemical New Material Co. Ltd has filed response for HENM and HEC (Hangzhou Electrochemical Group Co. Ltd). The examination of the response revealed that the producer has exported directly to India and also through unrelated exporter who has not filed the response. As the major share of the exports to India is through the non-responding exporter, the Authority decided to reject the response in view of incomplete information relating to exports to India.

Korea RP

i. Export Price for Hanwha Chemical Corporation & Hanwha Corporation, Korea RP

32. The examination of the response revealed that the producer M/s. Hanwha Chemical Corporation has exported mainly directly to India and a small volume is through related entity M/s. Hanwha Corporation. It has been submitted by the domestic industry that response of producer exporter from Korea should be rejected as they have not furnished the complete information regarding their operations in India, whereas information in public domain clearly shows that Hanwha Chemical India Pvt. Ltd. exists in India but the same information has not been disclosed in the response.

33. The Authority examined the information submitted by the domestic industry and the exporter and noted that the exporter has not disclosed about its India operations and have not claimed any adjustments (expenses) towards these operations. Further, there is wide variation in the adjustments, in different transactions, sought for computation of ex-factory export price without any reasonable explanation therein. The Authority may consider further additional information from the exporter, subsequent to preliminary finding, which would be considered after appropriate verification before issue of final findings. Therefore, at this stage, the Authority decided not to consider ex-factory export price claimed by the producer exporter from Korea.

34. The NEP for all the subject exports from Korea RP has been computed from the transaction-wise import data of DG System after making necessary adjustments in the CIF price. The provisional NEP so calculated is as mentioned in the dumping margin table below.

DUMPING MARGIN TABLE

S. No.	Producer/Exporter	NEP	CNV	DM	DM	DM
		USD/MT	USD/MT	USD/MT	%	Range
China PR						
Resin						
1	Shandong Gaoxin Chemical Co. Ltd.	***	1,908	***	***	50-60
2	Shandong Pujie rubber and plastic Co. Ltd.	***	1,908	***	***	60-70
3	Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.,	***	1,908	***	***	55-65
4	Weifang Sundow Chemical Co. Ltd.	***	1,908	***	***	50-60
5	Shandong Xuye Materials Co. Ltd.	***	1,908	***	***	60-70
Compound						
1	Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd.	***	2,365	***	***	0-10
2	Shandong Pujie rubber and plastic Co. Ltd.	***	-	***	***	-
3	Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.	***	-	***	***	-
4	Weifang Sundow Chemical Co. Ltd.	***	-	***	***	

5	Shandong Xuye Materials Co. Ltd.	***	2,365	***	***	20-30	
Korea RP							
		Resin					
	Producer/Exporter	NEP	CNV	DM	DM	DM	
		USD/MT	USD/MT	USD/MT	%	Range	
1	All producers exporters	1,201	1,823	622	52%	45-55	
Compound							
2	All producers exporters	1,908	2,663	755	40%	35-45	

35. It is seen that the dumping margin for all the producers-exporters from China and for the exports from Korea is above de minimis and significantly positive.

G. EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

36. The Authority has taken note of various submissions of the Domestic Industry and the exporters/importers/traders/users on injury to the domestic industry and analyzed the same considering the facts available on record and applicable laws. The injury analysis made by the Authority hereunder ipso facto addresses the various submissions made by the interested parties.

Cumulative Assessment

37. Article 3.3 of WTO agreement and Annexure II para (iii) of the Anti-dumping Rules provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:

- a) The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively account for more than seven percent of the import of like article, and
- b) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

38. The Authority notes that:

- a) The subject goods are being dumped into India from the subject countries. The margins of dumping from each of the subject countries are more than the de minimis limits prescribed under the Rules.
- b) The volume of imports from each of the subject countries is individually more than 3% of the total volume of imports.
- c) Cumulative assessment of the effects of import is appropriate as the exports from the subject countries not only directly compete with the like articles offered by each of them but also the like articles offered by the domestic industry in the Indian market. It is noted that the consumers who are buying from the domestic industry are also importing from amongst subject countries.

39. In view of the above, the Authority considers it appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from exports of the subject goods from the subject countries.

40. Rule 11 of AD Rules read with Annexure II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the AD Rules.

I. Volume Effect of Dumped Imports and Impact on Domestic Industry

i. Assessment of Demand

41. The Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the applicant and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below:

S.No.	Demand	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI-A
1	Sales of DI	MT	-	-	-	3,898
2	Imports from Subject Countries	MT	10,656	21,866	47,702	48,907
3	Import from Other Countries	MT	99,486	1,06,292	1,00,030	1,09,643
4	Total Demand	MT	1,10,142	1,28,158	1,47,731	1,62,448
Market share in demand						
5	Share of Domestic Industry	%	0.0	0.0	0.0	2.40
6	Share of Subject Countries Imports	%	9.67	17.06	32.29	30.11
7	Share of Other Countries	%	90.33	82.94	67.71	67.49
8	Total	%	100	100	100	100

42. It is noted that the total demand for the subject goods has steadily increased over the entire injury period. As compared to base year there is 47% increase in the POI. The market share of the domestic industry in total demand is merely 2.4% whereas market share of subject countries is 30% and share of other countries is 67.5%.

43. The opposing interested parties have argued that the production and sale of DI is very less and there is significant demand-supply gap in the product.

44. The petitioner has stated that against a total demand of subject goods during the POI, a large portion is from other than subject countries. M/s DCW Limited has started commercial production in POI with an installed capacity of 12,000 MT while M/s Kem One Chemplast project is for production of 27,000 MT of PUC. Further, M/s DCW has plans for enhancing capacities by 6,000 MT. They have stated that India is the largest market in the world for CPVC. They have further claimed that other countries are not indulging in dumping and therefore, 67.5% imports are at fair price and these imports are not the subject matter of imposition of antidumping duty. It is submitted by the domestic industry that if there was no dumping and the market operated in fair conditions then the domestic industry would have been able to meet much larger share of the demand.

45. The Authority notes that against a total demand of 1,62,448 MT in the POI (on annualized basis), import of 1,09,643 MT is from other than subject countries. The demand excluding these imports in the POI is 52,806 MT only. Presently, installed capacity in India is 12,000MT with another 27,000MT in the pipeline. There is a huge demand for the PUC which is steadily increasing and improvement of market conditions will definitely induce the Indian producers to add on to the capacities.

ii. Import Volumes, Values and Market Share

46. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the transaction wise import data of DG Systems.

S.No.	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI-A
(A)	Import Volume					
1	Subject Countries	MT	10,656	21,866	47,702	48,907
2	Other Countries	MT	99,486	1,06,292	1,00,030	1,09,643
3	Total import volume	MT	1,10,142	1,28,158	1,47,731	1,58,550

CIF Import Price						
1	China PR	Rs./Kg	128.20	118.11	67.24	87.25
2	Korea RP	Rs./Kg	-	-	68.98	88.99
3	Other Countries	Rs./Kg	166.53	179.76	122.74	136.26
Market Share in Imports						
1	Subject Countries	%	10%	17%	32%	31%
2	Other Countries	%	90%	83%	68%	69%
3	Total Share	%	100%	100%	100%	100%
Subject Country Imports in relation to						
1	Petitioner Production	%	-	-	-	1294%
2	Demand/Consumption	%	10%	17%	32%	30%

47. It is seen that

- Imports from subject countries have increased during the entire injury period and POI in absolute terms.
- The imports from subject countries have increased significantly in relation to total imports and demand/consumption in India.
- Imports from other countries have also increased in absolute terms but the rate of increase is not as significant when compared over the entire injury period.
- Imports from other countries in terms of share in total imports in India have declined over the entire period.
- The imports from other countries are at a price much higher than the import prices from subject countries. The gap between import price of subject goods from subject countries and other countries during the POI has widened significantly as compared to the base year.

II. Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

48. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact on the price of the domestic industry on account of the dumped imports is required to be seen by considering price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. The Authority considers, for the purpose cost of production, Net Sales Realization (NSR), the Non-Injurious Price (NIP) of the Domestic industry and landed cost of imports from the subject countries. However, in the instant case, where a new producer has recently commenced commercial production for a product which was not being produced before and where the Authority is investigating whether dumped imports are materially retarding establishment of the domestic industry in the market, the Authority considers that the effect of dumped imports on the domestic industry is required to be considered by considering the prices at which the product has been sold by the domestic industry or offered for sale, optimum cost of production, and NIP of the domestic industry and compare the same with the landed price of imports.

i. Price Undercutting

49. The petitioners have provided data for yearly as well as quarterly basis for calculating price undercutting by comparing import price with domestic selling price.

S.No.	Period	Import Volume	Selling Price	Landed Price	Price Undercutting	Price Undercutting
		MT	Rs./ Kg	Rs./ Kg	Rs./ Kg	%
1	POI (18 months)	73,361	***	95.25	***	(0-10)
2	2017-18 Q1	8,620	***	100.41	***	0-10

3	2017-18 Q2	10,760	***	94.46	***	(0-10)
4	2017-18 Q3	12,982	***	93.95	***	(0-10)
5	2017-18 Q4	13,830	***	92.37	***	(0-10)
6	2018-19 Q1	14,968	***	94.47	***	(0-10)
7	2018-19 Q2	12,199	***	97.89	***	(5-15)

50. It is noted that whereas the price undercutting was positive in the beginning when the domestic industry started selling the product in the market but it has become negative. It has been stated by domestic industry that negative price undercutting is on account of the fact that they are forced to sell the product at price below import prices to capture the home market.

51. The petitioners claimed that the decline in prices from other countries are not declined in the manner as import prices from subject countries. The subject countries import prices are lower than other countries import prices which shows the aggressiveness of subject countries producers to capture the Indian market.

ii. Price suppression/depression

52. In order to determine whether the dumped imports are depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the cost and price during the POI and compared the NIP determined for the domestic industry with the import prices.

53. The petitioners have claimed that cost of production has been computed at optimum cost of production by taking 100% capacity utilization because the actual costs are quite high due to low volume of production. The comparison of cost of sales and with selling prices has been undertaken in light of prevailing landed value of the imports as in the table below:

S.No.	Description	Unit	Resin	Compound
1	Cost of sales (Actual)	Rs/Kg	***	***
2	Cost of sales (Optimum)	Rs/Kg	***	***
3	Selling price	Rs/Kg	***	***
4	Landed Price	Rs/Kg	94.49	157.30

54. It is noted that

- Selling price of the domestic industry is far below its optimum and actual cost of sales.
- Landed value of imports is lower than the actual cost of sales and optimum cost of sale.
- It is seen that the domestic industry is unable to recover the cost and the selling prices are not remunerative on account of low priced imports. Thus, the imports are suppressing the prices of the domestic industry.

iii. Price Underselling

55. The Authority has also examined the price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject countries. For this purpose, the NIP determined for the domestic industry has been compared with the landed price of imports as per transaction-wise import data of DG Systems. The NIP has been determined on the basis of table verification of information provided by DI. M/s Kem One Chemplast Pvt. Ltd. has not been considered in NIP calculations as the same has not started production during the POI. The capacity utilization of POI for M/s DCW Limited has been optimized at 100% for computing NIP. All the elements of cost of production were examined and considered in working out the Non-injurious price (NIP) as per Annexure-III of the Anti-Dumping Rules for the PUC produced.

S.No.	Particulars	Unit	Resin	Compound
China PR				
1	Import Volume	MT	60,274	645
2	Non-Injurious Price	Rs/Kg	***	***
3	Landed Value	Rs/Kg	94.23	160.01
4	Price Underselling	Rs/Kg	***	***
5	Price Underselling	%	***	***
6	Price Underselling	Range	50-60	15-25
Korea RP				
1	Import Volume	MT	12,204	238
2	Non-Injurious Price	Rs/Kg	***	***
3	Landed Value	Rs/Kg	95.79	149.97
4	Price Underselling	Rs/Kg	***	***
5	Price Underselling	%	***	***
6	Price Underselling	Range	45-55	25-35

56. It is seen that the landed price of the subject goods from the subject countries are below the NIP determined for the domestic industry and thus causing underselling effect on the domestic prices.

III. Economic parameters of the domestic industry

57. Annexure II to the AD Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of the performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

58. One of the petitioner is a new industry and has started its commercial production in April 2017 and the other petitioner is yet to commence production. For the purpose of present investigation the economic parameters have been analyzed for the POI and trends have been observed for the six quarters of the POI. .

a. Production, Capacity, Capacity utilization and Sale

59. The domestic industry has set up facilities in which they can manufacture CPVC resin and CPVC compound. CPVC resin can either be sold in the market or converted into compound and then sold. For calculating the capacity utilization of the plant, the petitioners have appropriately converted production of compound and arrived at equivalent resin production which has been used for analysis of the performance of the domestic industry. The details are as shown in table below:

S.No.	Particulars	Capacity MT	Equivalent resin production MT	Capacity Utilization MT	Actual Sales MT
1	2017-18 Q1	2,500	***	***	***
2	2017-18 Q2	2,500	***	***	***
3	2017-18 Q3	2,500	***	***	***

4	2017-18 Q4	2,500	***	***	***
5	2018-19 Q1	2,500	***	***	***
6	2018-19 Q2	2,500	***	***	***
7	POI (April 17 to Sept 18)	15,000	***	***	5848

60. It is observed that

- i. Domestic industry has recently invested to set up a new capacity. The capacities are separately identifiable for resin and compound. The capacity has remained same during all the quarters of POI.
- ii. In addition, the second petitioner is setting up capacity of 27,000 MT which is yet to start.
- iii. There is increase in production and capacity utilization when seen on quarter by quarter basis. However, there is scope for improvement particularly in view of the increasing demand for the subject goods.

b. Profits, PBIT, return on investment and cash flow

61. Analysis of the performance of the domestic industry with regard to actual profit/loss, cash profits, PBT and return on investment are given in the table below. The plant being a new facility where production commenced during the POI and production volume is less than projections, the profit parameters have been determined considering 100% capacity utilization during the POI as given below-

S.No.	Period	Cost of sales	Selling Price	Profit/ Loss	Profit/ (Loss)	Cash profits	PBIT	ROI
		Indexed	Indexed	Indexed	Indexed	Indexed	Indexed	Range
		Rs/Kg	Rs/Kg	Rs/Kg	Rs/Lacs	Rs/Lacs	Rs/Lacs	%
1	2017-18 Q1	100	100	(100)	(100)	100	100	0-10%
2	2017-18 Q2	97	88	(164)	(164)	(217)	(289)	(0-10)
3	2017-18 Q3	96	92	(126)	(126)	(27)	(55)	(0-10)
4	2017-18 Q4	97	92	(131)	(131)	(55)	(90)	(0-10)
5	2018-19 Q1	98	93	(142)	(142)	(119)	(284)	(0-10)
6	2018-19 Q2	99	95	(136)	(136)	(93)	(252)	(0-10)

62. It is seen that

- a. The analysis of POI shows that the cost of sale of both CPVC is more than the selling price. The domestic industry has not been able to fetch a price above cost of production, due to presence of dumped imports. In fact, the selling prices have declined on quarter to quarter basis.
- b. The domestic industry has been suffering financial losses. PBIT, ROCE, profit before tax and profit per unit are all negative in all the quarters.

c. Employment, Wages and Productivity

63. Authority has examined the information relating to employment, wages and productivity, as given below.

Parameters	Unit	POI-A
No of Employees	Nos.	***
Wages	Rs. Lacs	***
Productivity per day	MT/Day	***
Productivity per Employee	MT/Nos	***

64. It is seen that the productivity per employee improved with the increase in production.

d. Magnitude of Dumping

65. The dumping margin determined in respect of the producers/exporters from the subject countries is significant for the Period of Investigation.

e. Growth

66. The Authority notes that the petitioner has set up new capacities in the face of large existing and increasing future demand but has not been able to reach optimum levels of production, sales and capacity utilization. The imports have prevented the domestic industry from establishing itself.

f. Factors Affecting Domestic Prices

67. Imports from subject countries are at a price materially below the cost of production and NIP of the domestic industry. Since the only competition to the domestic industry is import and the domestic industry is new producer in the Country, it is the import price that is solely responsible for the prices offered by the domestic industry. The imports from other countries are at much higher prices.

g. Ability to raise capital investment

68. Despite fresh investment in India in a product having sufficient demand in the Country, the performance of the domestic industry is adverse. The negative profitability, cash profit, ROCE, PBIT, and profit along with abysmal market share indicates that the ability of the domestic industry to raise capital investments for the sector is seriously affected due to the dumped imports from the subject countries. The investments in the pipeline, who is the second petitioner, is already feeling the price pressure of dumped imports. Further, another company (M/s Megmani FineChem Ltd.) who was intending to venture into the production of the subject goods have withheld its investments presently in view of low priced imports entering Indian market.

h. Imports impacting fresh investments by the petitioners

69. M/s. Kem One Chemplast Pvt. Ltd. has sought imposition of ADD, contending that dumping of the product is preventing the company from starting investment in the product. The company has provided Certificate of incorporation (dated ***); Memorandum and Articles of Association; and Industrial Entrepreneurship Memorandum to substantiate their intention of setting up of plant. The company has submitted information about its investment, containing inter alia, the following details

- a. Nature of company & Ownership structure – Joint Venture – ***% Chemplast Sanmar Ltd (CSL) and ***% (-----)
- b. Product Capacity planned
 - i. 22,000 TPA of CPVC Resin or
 - ii. 27,000 TPA of CPVC Compound
- c. Environment Clearance granted by MOEF & CC in ***
- d. Gross investment – Approx. Rs. *** crores (Project appraised by ***)
- e. Original target date for commencement of production – ***, 2020
- f. Plant location – Karaikal, Puducherry
- g. Source of raw materials
- h. Source of machineries – substantially (approximately ***) within India
- i. Time required for commencement of production – *** months
- j. Reasons for delay in project implementation – dumping at unfair prices by China

70. The company has contended that the decline in import prices of CPVC is not corresponding to decline in cost of associated raw materials. The company is ready to proceed with setting up of the plant. It has however put on hold the process in view of significant decline in the prices and the dumping in the country, threatening viability of the investment. The imposition of trade remedial measure against subject countries will protect the producers in India against impact of dumping.

i. Overall assessment of Injury

71. The examination of the imports of the subject product and performance of domestic industry clearly shows that the imports of the PUC have increased from subject countries particularly the import prices have severely declined

during last 18 months. The imports are at a price materially below cost of production and NIP of the domestic industry, thus resulting in dumping of subject imports evidenced by significant dumping margins and subject imports are having suppressing effect on the prices of the domestic industry. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, it is seen that the domestic industry could not sell the subject goods in the market at reasonable prices despite significant efforts due to availability of significantly dumped imports in the market. It is seen that domestic industry has been suffering price injury as evidenced by significant injury margins. The domestic industry suffered significant financial losses, cash losses and negative return on investments. The performance of the domestic industry has suffered adversely during the period of its existence and its performance is far below the targeted/projected levels. The domestic industry suffered material injury in its performance and its establishment is being retarded by dumping of the product in the Country.

H. Other Known Factors & Causal Link

72. Having examined the existence of material injury and retardation to the establishment of nascent injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti- Dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry.

(a) Volume and price of imports from third countries

73. It is noted that the imports from third countries have increased in absolute terms. However, the increase is at steady rate and import price from third countries are materially higher than import prices from subject countries. While imports from third countries are not the reason for injury being suffered by the domestic industry, the significant price difference between the imports from subject countries and rest of the world, increase in share of subject countries in total imports, significant decline in the prices from subject countries, while the import prices from rest of the world has not shown proportionate decline, not only establishes dumping, but also shows consumers importing from rest of the world at much higher prices and in increased volumes.

(b) Contraction in demand

74. The demand for the product under consideration has increased throughout the injury period. Thus, contraction in demand is not a possible reason for the injury suffered by the domestic industry.

(c) Changes in the pattern of consumption: -

75. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone material change and therefore could not have been the cause for the material injury suffered by the domestic industry. In fact, rising demand for the product shows pattern of consumption changing in favour of the product.

(d) Trade restrictive practices and competition between the foreign and domestic producers

76. The Authority notes that there is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the domestic industry.

(e) Developments in technology: -

77. The Authority also notes that technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury. Further, the petitioner has set up a new plant for production of the product and the technology used is at par with the rest of the world.

(f) Export performance:

78. The petitioners have not exported the product under consideration. Hence, claimed injury to domestic industry cannot be attributed to exports.

(g) Performance of other products being produced and sold by the domestic industry:

79. The petitioner is a multiproduct company, however, the cost and financials have been segregated and considered only for PUC and analyzed for the present investigation. Claimed injury to the domestic industry is not on account of other products.

I. Magnitude of Injury and injury margin

80. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin during the POI and the injury margin so worked out is as under:

S.No.	Producer/Exporter	Landed Price	NIP	Injury Margin	Injury Margin	Injury Margin	
		USD/MT	USD/MT	USD/MT	%	Range	
China PR							
		Resin					
1	Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd	***	***	***	***	50-60	
2	Shandong Pujie rubber and plastic Co. Ltd	***	***	***	***	60-70	
3	Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.,	***	***	***	***	50-60	
4	Weifang Sundow Chemical Co. Ltd	***	***	***	***	55-65	
5	Shandong Xuye Materials Co. Ltd	***	***	***	***	60-70	
		Compound					
1	Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd	***	***	***	***	10-20	
2	Shandong Pujie rubber and plastic Co. Ltd	-	-	-	-	-	
3	Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.,	-	-	-	-	-	
4	Weifang Sundow Chemical Co. Ltd	-	-	-	-	-	
5	Shandong Xuye Materials Co. Ltd	***	***	***	***	30-40	
		Korea RP					
	Producer/Exporter	Landed Price	NIP	Injury Margin	Injury Margin	Injury Margin	
		USD/MT	USD/MT	USD/MT	%	Range	
		Resin					
1	All producers exporters	1,409	***	***	***	50-60	
		Compound					
2	All producers exporters	2,207	***	***	***	25-35	

J. Indian Industry's Interest & Other issues:

81. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
82. It is recognized that the imposition of anti-dumping duty measure might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of this product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline in the performance of the domestic industry and help them establish themselves. In the long run, a wider choice will be available to the consumers of the subject goods.

K. CONCLUSIONS

83. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in this finding and on the basis of the above analysis of the state of dumping and consequent injury, the Authority concludes that:

- i. The subject goods have been exported to India from the subject countries at prices less than their normal values in the domestic market of the exporting country;
- ii. The dumping margins of the subject goods imported from the subject countries is above de minimis and substantial;
- iii. The domestic industry is suffering material retardation and material injury due to the dumped imports of subject goods from the subject countries;
- iv. Provisional antidumping duties are required to be imposed in order to address injury being suffered by the domestic industry during investigation.

L. RECOMMENDATIONS

84. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having provisionally established positive dumping margin against the subject countries, as well as material retardation to the establishment of the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of provisional duty is necessary to prevent injury being caused by the dumping of subject goods pending completion of the investigation.

85. Therefore, Authority considers it necessary and recommends provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

86. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the Authority recommends imposition of provisional antidumping duty on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, as the difference between the landed value of the subject goods and the amount indicated in Col 7 of the duty table appended below, provided the landed value is less than the value indicated in Col 7. The landed value of imports for this purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

Duty Table

S.No.	HS Code	Description of goods	Country of origin/Export	Producer	Specification	Amount in USD Per MT			
1	2	3	4	5	6	7			
1	39042110 39042190 39042210 39042290 39041090 39049000	Chlorinated Polyvinyl Chloride Resin (CPVC) - whether or not further processed into compound	China PR	Shandong Gaoxin Chemical Co Ltd	Resin	2,066			
					Compound	2,609			
2				Shandong Pujie rubber and plastic Co. ltd	Resin	2,072			
					Compound	2,849			
3				Shandong Xiangsheng New Materials Technology Co., Ltd.,	Resin	2,097			
					Compound	2,849			
4				Weifang Sundow Chemical Co. Ltd	Resin	2,031			
					Compound	2,849			

5			Shandong Xuye Materials Co. Ltd	Resin	2,057
				Compound	2,591
6			All other producers exporters	Resin	2,165
				Compound	2,849
7		Korea RP	All producers exporters	Resin	2,031
				Compound	2,849

M. FURTHER PROCEDURE

87. The procedure as below would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- All the interested parties are invited to may make their views, on preliminary findings, known at the time of oral hearing.
- The Authority would hold oral hearing in terms of Rule 6(6) to give an opportunity to all the interested parties to present their views relevant to the investigation followed by written submissions.
- The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary.
- The Authority would disclose the essential facts as per the Anti-Dumping Rules before notifying the final findings.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. and Director General